7167

1. Title Muhūrta Cintāmaṇi (Vivāha)
2. Accession No. 5613
3. Folio No./Pages 4,7,15-51
4. Lines 9
5. Size 23 × 10Cm.
6. Substance Paper
7. Script Devanāgarī
8. Language Sanskṛit
9. Period Not available
10. Beginning—
11. End—
12. Colophon No
13. Illustrations No
14. Source Donation
15. Subject Jyotish
16. Revisor No
17. Author Devagyana.
18. Remarks Pages are in disturbed order, beginning & end could not be traced out.

P. 120
X G. K. U.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

005613

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

2

७औ।विषुवंविस्तुपदंसिंहाप … ।।संक्रांति
कालाउभयत्रनाडिकाःपुण्य … गपरत्रसंक्र
मेपूर्वापराहोतिमपर्वभागर … पुण्यमयो
दयास्तात्।।पूर्वपरस्तायदि … यात्रिनाडि
प्रमितार्कविंवादर्द्धोदिता … स्तःपुण्यो
तदानीपरपर्वघस्त्रो ६ … ।।वज्रलीत्या
नेसौम्येपरानाज्योतिष्ठएयदाः ७ तथायनांशंखरसा ६० हृतात्स्वस्पष्टार्कग
त्याविहृतादिनाद्यैः मेषादितःप्राक्कलसंक्रमास्युर्दीनेजपादौवकुपुण्यदास्ते।।
८।।अथसंक्रांतिमुहूर्त्तज्ञानमाह समंमङउक्षिप्रवसुध्रुवोग्निमघाद्रिपर्वास्त्र प

3

X

50 - 120

005613

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२

[illegible] स्थिरा [illegible]॥ ॥ संक्रांति

७ औ। विषुवं विष्णुपदं सिंहा ५ लि॰ गो २ वे ३ मि॰ द्वि॰ [illegible] चर स्थिर [illegible] निशीथतो ऽर्वाक् परत्र संक्र

कालाउभयत्र नाडिका: पुण्या मता: षोडश षोडश [illegible] निशीथतो ऽर्वाक् परत्र संक्र

मे पूर्वापरयो हांतिमपूर्व भागयो: ४ पूर्णे निशीथे यदि संक्रम: स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथो

संध्या त्रिनाडि

द्या स्तात्॥ पूर्वपरस्तादर्द्दियाम्य सौम्यायने दिनपूर्वपरे तु पुण्ये ५ संध्या त्रिनाडि

प्रमिता कबिंबा दर्द्धोदितास्तादधऊर्द्ध मत्र चेद्याम्य सौम्ये अयने क्रमात्त: पुण्यौ

तदानीं परपूर्वघस्रौ ६ याम्यायने विष्णुपदे चाद्यौ मध्यास्ति लाजपौ॥ वज्रसीत्या

ननेसौम्ये परानाड्यो तिथि पुण्यदा: ७ तथायनांशांरवरसा ६० हृताप्तास्वष्टार्कगम

त्या विहृतादिनाद्यै: मेषादित: प्राक्काला संक्रमास्युर्दानजपादौ व ऋ पुण्यदास्ते॥

८॥ अथ संक्रांति मुहूर्त्त ज्ञानमाह समं [illegible] प्रवस्युग्रवो [illegible] मघा [illegible] पूर्वास्त्व प

005613

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुं०
१५

मंत्रहत्स्यात्॥ क्रवाविदैर्वदिति भेजघन्यं सार्धाधुवाशीनिलशाक्रसाम्यं १ जघन्यभेसंक्रम

णेमुहूर्त्तांशरेदे वो १५ वाणकताः ४५ बृहत्सु खराम ३० संख्यासमभेमहार्घसमर्घ

साम्यं विधुदर्शनेपि १० इतिद्वितीयाचंद्रदर्शनेपि॥ अर्कादिवारे संक्रांतो कर्कस्या

द्विशोपकाः दिशो १० नखा २० गजा ८ सूर्या १२ धृत्यो १८ ष्टादश १८ सायकाः ५॥ १३॥

| | |
|---|---|
| | |
| | |
| | |

स्या नैतिले नागचतुष्पदे रवि
सुतोनिविष्टस्तगरादिपंच
के किंस्तुघ्नद्वई: शकुनौस
कौलवेनेष्ट: समः श्रेष्ठइहा

| | | |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |

१५

र्घवर्षणे १२ सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहद्विपट्घोटका: श्वाजो गौश्च रणायुध

---

शस्ताशशोकपापैत्रिभवांगसंस्थे॥ व्यस्तांत्यगे: सतवचरैर्मृगेंद्रे स्त्रयोघटेकोयुतोचवि

स्रुः ६२ शिवोन्त्युग्मेद्विननौचदेव्य: श्रुशाम्बरे सर्वइमेस्थिरर्क्षेपु [illegible] ब्येग्रहाविधुप

यस्सर्पभूतादयोन्त्येष्ववणेजिनघ्न ६२ इतिश्रीदैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचि

तेमुहूर्त्तचिंतामणौ नक्षत्रप्रकरणं द्वितीयं॥ ॥२॥ ॥घोरार्कसंक्रमणभुग

रवौहिमूढज्ञानध्वांक्षीविशो लघुविधौ चचरक्षभौमे चौराम्महोदरयुतानुमतीज्ञ

मैत्रे मंदाकिनीस्थिरगुरौसुखयेचमंदा १ विमाश्चमिश्रभमृगौतुपक्षं श्वमि

श्रातीक्ष्णार्कजेंत्यजसुखावलुराक्षसीच श्रेयोदिनस्यनृपतीन्प्रथमेनिहंति

मध्येद्विजानपिविशेपरकेचमज्ञान्॥ २ अस्तेनिशाप्रहरकेषुपिशाचका

दीन्नक्तंचरानपिनटान्पशुपालकांश्च सूर्योदयेसकललिंगजनेचसौम्ययाम्या

यनेमकरकर्कटयोर्निरुक्ते ३ षडशीत्याननेचापुन्नयुक्कन्याऋषेभवेत्॥ तुला

स्वववतोवाहरवे:संक्रमे वस्त्रंश्वेतसुपीतहारितकपांडुरक्तकालासितंचित्रंकेवलदि गु॰ ३
ग्यनाभंमयशस्त्रंस्याद्भुशुंडीगदा १३ खड्गोदंडशरासतोमरमयोकुंतश्चपाशोंकुशो
स्त्रंवाणस्त्वथभक्ष्यमन्नपरमान्नंभैक्षपक्वान्न दुग्धंदध्यपिचित्रितान्नमधाज्यंत
पाशाकेराघोलेपोमृगनाभिकुंकुममथोपाटीरमुद्रोचनं १४ यावकौतमदोनिशा
जनमथोकालागुरुश्चंद्रकोजातिर्दैवतभूतसर्पविहगांपश्वेणविप्रास्ततः॥क्ष
त्रोवैश्यकशूद्रसंकरभवाःपुष्पंचपुन्नागकंजातीवाकुलकेतकानिचतथावि
ल्वर्कदूर्वाम्बुजं १५ स्यान्मल्लिकापाटलिकाजपाचसंक्रांतिवस्त्राशनवाहना
द्यैः नाशंप्रयातंहत्युपजीविनांचस्थितोपविष्टस्वपतांचनाशः १६ संक्रांतिधि
ष्ण्याधराधिष्ठितस्त्रिभेस्वभेनिरुजंगमनंततोगभेसुखंत्रिभेपीडनंमंगभेष्वर्कात्
[illegible]

| वार | नक्षत्र | नाम | फल |
|---|---|---|---|
| सूर्य | उग्रभे | घोरा | शूद्रसुखी |
| चंद्र | लघुभे | ध्वांक्षी | वैश्यसुखी |
| भौम | चरभे | महोदरा | चौरसुखी |
| बुध | मैत्रभे | मंदाकिनी | नृपसुखी |
| गुरु | स्थिरभे | मंदा | ब्राह्मणसुखी |
| शु॰ | मिश्रभे | मिश्रा | पशुसुखी |
| शनि | तीक्ष्णभे | राक्षसी | चांडालसुखी |

षडशीतिमुख २।३।६।१२
विषुवती।१।७॥
विष्णुपदी ५।८।११।२॥
दिनस्यप्रथमेंऽशे नृपतिं हंति
दिनस्यमध्यांशे द्विजान्हंति।
दिनचतुर्थांशे वैश्यान्हंति
सूर्यास्तकाले शूद्रान्हंति
रात्रेःप्रथमेप्रहरेपिशाचान्हंति
रात्रेर्द्वितीयेप्रहरे [illegible] हंति
रात्रेस्तृतीयेप्रहरेनटान्हंति
रात्रेश्चतुर्थेप्रहरेपशुपालकान्हंति

सूर्योदयकालेलिंगिजनंसंन्यासिप्रमुखंहंति १६

| करण | बव | बालव | कौलव | तैतिल | गर | वनिज | भद्रा | शकुनि | चतुष्पद | नाग | किंस्तुघ्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाहनं | सिंह | व्याघ्र | वराह | रासभ | गज | महिष | अश्व | श्वान | मेष | गो | कुर्कुट |
| वस्त्रं | श्वेत | पीत | हरित | पांडु | आरक्त | काला | कम्ल | चित्र | कंबल | दिकू | घनाभ |
| आयुधं | भुशुंडी | गदा | खड्ग | दंड | धनुष | तोमर | कुंतल | पाश | अंकुश | ब्रह्मास्त्र | बाण |
| भक्ष्यं | अन्न | परमान्न | भैक्ष्य | पक्वान्न | दुग्ध | दधि | चित्रान्न | गुड | मधु | घृत | शर्करा |
| लेपनं | कस्तूरी | केसर | चंदन | मृत्त | गोरोचन | अलक्तक | मार्जीरधर्म | हरिद्रा | सुरमा | अगुरु | कर्पूर |
| जातिः | देवता | भूत | सर्प | पक्षी | पशु | मृग | विप्र | क्षत्री | वैश्य | शूद्र | वर्णसंकर |
| पुष्पं | पुन्नाग | जाती | बकुल | केतकी | बिल्व | अर्क | दूर्वा | कमल | मल्लिका | पाटल | [illegible] |

१७ नपेक्षणंसर्वकृतिष्वसंगरः शास्त्रंविवहा

गमदीक्षणेरवेः वीर्यं ताराबलं नौविधुर्विशेषोर्बले १८ स्रग्धरा
र्कसंक्रांतिविहीनचक्रो मासोधिमासः क्षयमासकस्तु द्विसंक्रमात्तत्र विभागयोस्तस्तिं
योर्हिमासोप्रथमांत्यसंज्ञौ २० इतिश्रीदैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिं

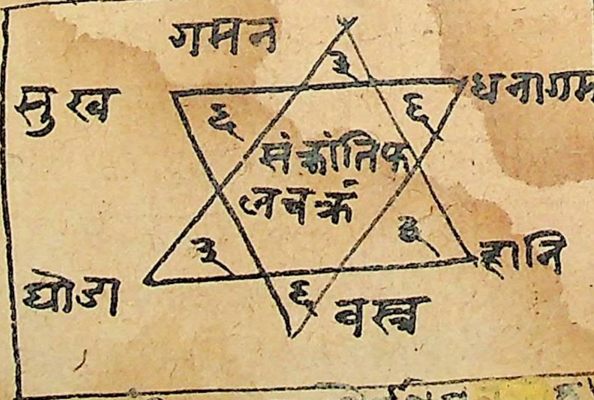


तामणौ संक्रांतिप्रकरणं तृतीयं ३
अथगोचरप्रकरणं सूर्योरसांत्ये ६।१२ ख
युगे १०४ ग्निनंदे ३।९ ष्टिवाक्षयो ११।५ भौम
शनीतमश्च रसांकयो ६।९ र्लाभशरे ११।५
गुणांत्ये ३।१२ चंद्रोंबराद्यौ १०।४ गुरुर्धनंद
योश्च २।९ ।। लाभा ११ ष्टमे ८ चाद्य १ मारे ५ २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मु० ८ सांद्दत्ये १२न ११७व ये २ज्ञोद्वि २१रे ५ख्रि ४ रामे ३ रसां६ रूयो ९॥ नीग ८ विधो १ खनागे १। ८
लाभ ११ व्यये १२ देवगुरुः शरा ध्यौ ५।४॥ २ ॥ धने त्रै २।१२ नवा शोर ९।१० द्वि ७ गुणे ३ शि
वाही १।११।८ शुक्रः कुनागे २।८ द्विनगे २।७ ग्नि ३ रूपे १। वेदांवरे ४।१० पंच निधौ ५।९ गजे
षो ८।५ नंदेशयो ९।११ भानुरसे १२।६ शिवाग्नौ ११।३॥ ३ ॥ क्रमाद्धुमो विद्ध इतियद्दस्या
त्पितुः सुतस्यात्र न वेधमाऽऽः ३ ष्टोपि खेटो विपरीत वेधा द्युमोद्विर कोलेॐ। पश्च
मदःसितेज्ञः ४ स्वजन्मराशेरिह वेधमाऽऽरन्येग्रहाधिष्ठितराशितः सः द्विमा
दि विंध्यांतर एव वेधो न सर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः ५ जन्मर्क्षे निधनं यहे जनितो घा
तेक्षतिः श्रीर्व्ययो चिंता सौरव्यं कलत्रदौः स्थ्यमृ तपः८ स्युर्मान नाशः ९ शः सुखं लाभो ११
११ पाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्ण गोदानं शांतिरघोयहं त्वशुभदं नो वीक्ष्य 10

माऽऽःपरे ६ पापांतःपापयुक्शूने पापांशेद्द शुभोप्य ऽसत् शुभांशेचाधिमित्रांशेगुरुद्द
ष्टे शुभोपि सत् ७ सितासितादौ स्वजे चंद्रे पक्षौ शुभा शुभौ व्यत्यासे चाशुभौ सो
तौ संकटे ज्ञे च बलं त्विदं ८ वज्रं शुक्रे ज्वे ससुमुक्ताप्रवालं भौमे गोगोमेदमार्कौ सुनीलं
केतौ वैडूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिर्माणिक्यमर्के तु मध्ये ९ णिकामुक्ताफल वैडु
माणि गारुत्मतं पुष्पक वज्रनीलं गोमेद वैडूर्यक मर्कतःस्यु रत्नान्यथोज्ञस्य मुदे सुव
र्णं १० धार्य्यं ताज्ञा वर्त्तके
राहुकेत्वो रूप्यं शुक्रें द्वोस्त्र
मुक्तागुरोस्तु लोहं मंदस्या
रभात्त्वोः प्रवालं तारा जन्म

| स्व | स्व | मं | मं | | चं | चं | बु | बु | गु | गु | शु | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ ९ ३ ११ | १२ ४ ७ ८ | ६ ११ ३ | ९ ५ १२ | | १० ३ ११ ९ ६ | ४ ९ ८ १२ २ | २ ४ ६ ८ १० ११ | ५ ३ ९ ६ १२ | ५ २ ७ ११ | ४ १२ ३ ८ | १ २ ३ ४ ५ ८ ९ ११ १२ | [illegible] |
| शु | वे | शु | वे | | | | | | | | | |

10

सरपंच

प्रवर्सि १ नाशौ २ मरणं ३ जयश्च ४ हास्या ५ रतिः ६ क्रीडित ७ सुप्त ८ भुक्ता ९ ज्वर १० कंप ११ ::॥
स्थिरता १२ ह्यवस्था मेषात् क्रमान्नामसदृक्फलास्युः १५ लाजाकुष्टबलाप्रियंगुय
नसिद्धार्थैर्निशादारुभिः पुंषो लोध्रयुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं यहोत्थाग्रहत् धेनुः
कं घ्रुरणे वृषश्च २ कनकं ४ पीतांबरं ५ घोटकः श्वेतो ६ गौरसिता ७ महासि ८ रजत
इत्येतारवेर्दक्षिणः १६ स्वर्यो रसोम्यास्फुजिन्नेपक्षनाग ८ स
प्ता ७ दिघस्तान् विधुरग्नि ३ नाडी तमोऽपमेज्यास्त्रिरसा ६ श्चिरमासान् गं तव्यारा
शेः फलदाः पुरस्तात् १७ दुष्टे योगे हेमचंद्रे च शंखं धान्यं तिष्यदं ति घोतं दुसो
श्च वारे रत्नं क्षेच गां हेमनाड्याद्धात् सिंधत्र्यं च नारासु राजा १८ राश्यादिगोर
विकुजो फलादौ सितेज्यौ मध्ये सदा शशिसुतश्च रवे ज्ञमंदौ अथान्त्यवृद्धि

मु० क्षीत्रिरा हति तः स्यात् ११ अथ ताराबलं जन्मस्य १ संपद् २ विपद् ३ क्षेम ४ प्रत्यूरि ५ साधका ६ ॥
१८ वध ७ मैत्रा ८ अतिमै ९ त्रास्युः स्तारानामसदृक्फलाः १२ मृत्यो स्वर्णतिलान् विपद्यपि गुडं शा
कं त्रिजन्मस्वथोदयात्प्रत्यरितारकासु लवणं सर्वो विपत्प्रत्यरि मृत्युश्वादिमपर्ययेन शुभ अथमा
दौ येषां द्वितीये त्रकानादिमांत्यतृतीयकां पर्शुभाः सर्वेत्तृतीये स्मृताः २३ षष्ठिम्नं तमं

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | ऽश्ले |
| म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | ऽनु | ज्ये |
| मू | पू | उ | श्र | ध | श | पू | उ | रे |

| | | |
|---|---|---|
| ईशान दूधःया चिगरुड मणि | पूर्वे वज्र भु क हिरा | आग्नेय चं इ मुक्ताफल |
| उत्तर गुरो पुष्पराग | मध्ये सूर्य्ये माणिक्यं | दक्षिण भौ मप्रवाल |
| वयव्य केतु वैडूर्य | पश्चिमे शनौ नीलमणि | नैरृत्य रा होगोमेद |

भु क्रघटीप्रकं युगा ४ हतं ॥ णरा ५ धिष ५ं
गइत्र घतो के १ शेषे ऽ वस्था क्रियाधोः ६
हि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रि ३

गमेमान्युत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभं ५ भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्चसंध्याभौमार्का
कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः गर्भाधानंत्र्युत्तरेंदर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपेसत् ॥६॥ केंद्र १।४।७।१०
त्रिकोणेषु ५।९ सत्सु भैश्चपापैस्त्र्याय ३।६।११ रिःफगैः पुंग्रहदृष्टलग्नेओजांशगेंदावपियुग्म
रात्रौचित्रादितीज्याश्विषुमध्यमंतत् ॥ ७ ॥ जीवार्कारदिनेमृगेज्यविधिभातिश्रोत्रादिति
बुध्नभैरिक्ता ४।९।१४ मा ३।८।१२ सा ६।१४।८ वर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे सीमंतोऽष्टम
षष्ठमासिमृदुभैः केंद्र १।४।७।१० त्रिकोणे ९।५ खलैस्त्र्याय ११ रि६ त्रिषुवा
ध्रुवांत्यमृदुहे लग्नेचपुंभांशके ८ मासेश्वराःसित १ कुज २ ज्य ३ रवी ४ ५ ५ सौ
रि ६ चंद्रात्म ७ जा ८ स्तनुप ९ चंद्र १० दिवाकराः ११ स्युःस्त्रीणांविधोर्बलमुशंतिविवा
हगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसुभर्तुरेव ९ पूर्वोदितैःपुंसवनंविधेयंमासेतृती

मु० [illegible]
१९ नंदसूनुदैवज्ञरामविरचितेमुहूर्त्तचिंतामणौगोचरप्रकरणंचतुर्थं ४ ॥ ॥ ॥
अथसंस्कारप्रकरणं आद्यंरजःशुभंमाघमार्गराधेषफाल्गुने ज्येष्ठश्रावणयोःशुक्लेस
द्वारेसन्निधौदिवा १ अतिनिंद्यमदुक्षिप्रध्रुवस्वातौसितांवरे मध्यंचमूलादितिभपि
त्र्यमिश्रेपरेष्वसत् २ भद्रानिद्रासंक्रमेदर्शरिक्तासंध्याषष्ठीद्वादशी ८ वैधृतेषु रोगे
रक्तांचेदुसूर्योपरागेपातेचाद्यंनोरजोदर्शनंसत् ३ हस्तानिलाश्विमृदुमैत्रवसूत्त ग
राख्यैःशक्रान्वितैःशुभतिथौशुभवासरेच स्नायादथार्नववधूर्मृदुकूलवस्त्रा
ष्विधातभिरलंभतेचगर्भं ४ गंडांतंत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलांतकं दास्रं
पौष्णमघोपरागदिवसंपातंतथावैधृतिं पित्रोःश्राद्धदिनंदिवाचपरिघाद्यर्धंस्वपत्नी १९

प २

त १० वासरे स्याद्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनां दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणं
चतुर्थमासे गमो कसमये ऽर्के १२ मिते क्लिवासत १५ अथ जलपूजा कवीन्याल
चैत्राधिमासेन पोषे जलं प्रजयेत्सूतिकामासपूर्त्तौ बुधेन्दीज्यवारे विरिक्ते तिथी

हि श्रु तीज्यादितैर्के नैऋत्यमैत्रैः १६ अथा
न्नप्राशनं रिक्ता ४।९।१४ नंदा १।६।११ ८ दर्श ३०
हरिदिवसमयो सौरिभौमार्क वारं लग्नं जन्म क्षे ल
ग्नाष्टमगृलवं मीनमेषालिकं च हित्वा षष्ठात् समे मा
स्यथ हिमगदृशां पंचमादोजमासे नक्षत्रैः स्यात्स्थिरा
ख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत् ॥१७॥ केंद्र
यत्त्रिधाव सुरजामासि ८ मन्दा विलग्ने ... १० तज्जातकमादिशि

मु. २० धे शोर्विद्धं पर्वाख्य रिक्तोनतिथौ शुभेह्नि एकादशे द्वादशेऽपि यस्त्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्या
त् १९ पौष्णध्रुवेंदुकरवातहयेषु सूतिस्नानं समित्रभरवीज्यकुजे शुभं स्यात् नार्द्रात्र्यं क्षति १३
मघांतकमिश्रमूलत्वाष्ट्रं ज्ञ सौरिवसु ८ षट् ६ रवि १२ रिक्त ४।९।१४ तिथ्यां १२ अथ
प्रथमादिमासेषु दंतजन्मफलं मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत्स्वयं ह
न्यात्स क्रमतोनुजात २ भगिनी ३ मात्र ४ ग्रजा ५ द्यादिके षष्ठाद्यौ लभते हि भोगम
तुलं ६ तातात्सुखं ७ पुष्टतां ८ लक्ष्मी ९ सौख्यं मथो जनौ सदशनो चोर्ध्वं स्वपित्रादिहा
१३ अथ दोलानिष्क्रमणे दोलारोहे र्कभात्पंच ५ शर ५ पंचेषु ५ सप्तभैः ७ ॥ नैरुज्यं
मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः १४ दंता ३२ र्का १२ भप १६ धृति १८ दिग्मि २०

ष्यंपञ्चयञ्चातिवालत्तैराजिव्यैस्तस्य नृत्तिः प्रदिष्टा २२ अथ तांबूलभक्षणं वारे भौ
मार्कि हीने श्रवणमृउलघुभे विष्णुमूलादितीड स्वातीवसंज्ञुपेते मिथुनवृषमृगा१०धयुदकुं
भ ११ गो२ मीन १२ लग्ने सौम्येकेंद्र त्रिकोणे शुभगगनगैः शत्रुद्द्लाभ ३ त्रिसंस्थे स्तो
र लं सार्द्धमासद्वय २।१५ मितसमये शोकमन्नाशने वा २३ अथ कर्णवेधः हित्वैतान्
चैत्रपौषा ९ वमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां युग्माब्दं जन्मतारामृतु ६ मुनि ७ वसु ८
संमिते मास्यथो वा जन्माहात्सूर्य १२ भूपै १६ परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेंदुवारे ऽथौजा
ब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः २४ संशुद्धे मृतिभवने ८ त्रिको
ण ९।५ केंद्र १।४।७।१० आय ३ य ११ स्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने पापाख्यैः रिद्सहा
जा ३ य ११ गेह संस्थैर्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् २५ अथ चौलं गीर्वाणांबुप

२१

[illegible] कोण ९।५ सहज ३ शुभैः ख १० शुद्धलग्नात्त्रलाभे
रिपु ६ गैश्च वदंति पापैः लग्नाष्टषष्ठ १।८।६। हितं शशिनं प्रशस्तमैत्रं
बुपानिलजनर्भमसत्त्वकेचित् १८ क्षीणेंदु शर्णे चंद्रेन्यज्ञ भौमार्कार्कि
भार्गवैः त्रिकोणव्ययकेंद्राष्ट ९।५।४।७।१।१०।८ स्थितैरुक्तं फलं यथा हैः १९
भिक्षाशी पत्तकृद् दीर्घजीवी ज्ञान्नी वपिनरुक् कुष्ठीवान्नक्लेशवान् व्या
धिमान्भोगभागिति २० अथ गृह्युपवेशनं पृथ्वीं वराहमभिपूज्य
कुजे विशुद्धे रिक्ते ४।९।१४ तिथौ व्रजति पंचममासि बालं वधाशुभे
क्षितिक दिसत्त्व मथ ध्रुवेंदुजेष्टक्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्तौ २१ त
स्मिन्काले स्थापयेत्तु रत्नाढ्यं स्वं शास्त्रं शस्त्रकं लेखनीं च स्वं गेरु

005613
CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नि छापरिण यदहनाधानगेह प्रवेशास्थालराजाभिषेका व्रतमपि चशुभं नैव वान्याय नस्यात्

२२ नोवावाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरु सितयो नैव केतूदये स्यात पक्षंचा १५ र्द्ध ८ चं केंद्रे हतितम
परेयावादीक्षंतउग्रे २६ पुरः पश्चाद् गोर्वाल्यं त्रि ३ दशा १० हं च वार्द्धकं पक्षं १५ पंच
दिनं ते हि गुरोः पक्ष मुदाहृतं २७ तेदर्श १० हं द्वयो प्रोक्ते केचित्सप्त ७ दिनं परे त्र्यहं ३
तात्त्विके प्यन्येरर्द्धा हं चत्र्यहं ३ विधौ: २८ चूडा वर्षा त्तृतीयात्प्रभवति विषमे ष्टार्क १२
रिक्ता ४।९।१४ घ ९ ष ष्ठी ६ पर्वोनाहे विचैत्रोदगयन समये ज्ञेंदु शुक्रेज्य कानां वारे लग्ना
शयोश्चा स्वभ निधन ८ तनौ नैधने शुद्धि युक्ते शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदु चर लघु भैरायत्रि
षट् ६ त्रि ३ स्थपापैः २९ क्षीणचंद्र कुज सौरि भास्करैर्मृत्यु शस्त्रमृति पंगुताज्वराः॥
(१) सुः क्रमेण बुध जीव भार्गवैः केंद्रगैश्च शुभमिष्टतारया ३० पंचमासाधिके मातु २२
नखच्छेदे वपने नृपानां दर्शने तथा पाणिग्रह प्रयाणे च चंद्रे शाद्गुणः शुभः १ गुरि

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्षीणचंद्र ८ | पूर्णचंद्र ५ | बृहस्पति १२ | बुध १ |
| मौक्षौसी | यज्ञकृत | चिरंजीवी | ज्ञानीच |
| मंगलघ | सूर्य ७ | शनैश्चर ९ | शुक्र ८ |
| पितरुक् | कुष्टी | अन्न क्लेशी मातृव्याधिर्बीन | भोगीच |

गर्भे चौलं शिशोर्नेसत्॥
पंचवर्षाधिकस्येहगर्भेण्या
मपि मातरि ३१ तारादौ
ष्टे ऽज्चेवि कोणो ऽपि गे वाक्षौ
रं सत् स्यात्सौम्य मित्र सुर्ते ५
सौम्ये भेज्वे शोभने ऽपि इष्ट तारे

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्षीणचंद्र | भौम | शनि | सूर्य | बुध | गुरु | शुक्र | |
| मरणं | शस्त्रेण मृतिः | पंगु ता | ज्वरा | सुख | शुभ | शुभ | |

शस्त्राज्ञेया क्षौर यात्रादि
(क) त्ये ३२ स्वतुमत्याः स्तनि कायाः स्तनो ऋषोलादिनाचरेत्॥ ज्येष्ठापत्यस्य न
ज्येष्ठेके श्चिन्मार्गेपि नेष्यते ३३ दंतक्षौर नख क्रिया त्र विहिता चौलोदितेवा

मु० रमपातन्यारस्वानूविहायनवमंच दस्त चसव्यातिया रिक्तापूर्वानशानिरासनरणमम

२३ याणोघतस्नातान्यक्तहुताशनेनेहिपुनःकार्याहितमेष्नुभिः ३४ कन्तुपाणिपीडनम्

निवंधमोक्षणेक्षूरकर्मचद्विजन्नृपाज्ञयाचरेतसंवबाहतीर्थगमसिंधुमज्जनेक्षूर

मान्चरेन्नखलुगर्भिणीपतिः ३५ भारद्वाजः मार्गशीर्षेतथाज्येष्ठेक्षौरंपरिणय रि

नं व्रतं आद्यपुत्रउहितुस्तुयत्नेनपरिवर्जयेत ३६ नृपाणांहितंक्षौरमेश्मश्रुक

र्मदिनेपंचमेपंचमेऽस्योदयेवा षडङ्ग्नि३स्त्रि३मैत्रोष्टकैः पंच५पिच्योदमोऽ

श्री ष्टेमाक्षौरकृत्स्नुमेति ३७ अथविद्यारंभः गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्यपं

चमाष्टकेतिथौशिवा११र्क१२दिग१०द्वि२षट्६शर त्रिके३ वासुदक् लघुश्र

वोनिलांत्यभादितीशतक्षमित्रभेचरोनसत्तनौशिशोर्लिपिग्रहःसतांदिने ३८ अ २३

थविद्यारंभः मृगा३करा३श्रुते स्वये३श्चिमूलपूर्विकात्रयेगुरुद्वये२र्कजीवविस्सि

ते द्विषट्दशारा त्रिके३ शिवा११र्क१२दिग१०द्विके२तिथौध्रुवांत्यमित्रभेपरैः

शुभैरधीतिरुत्तमात्रिकोणकेंद्रगैःस्मृता ३९ अथव्रतबंधः विप्राणांव्रतबंध

नंनिगदितंगर्भाज्जनेर्वाष्टमे८वर्षेवाप्यथपंचमेक्षितिभुजांषष्ठेतथैकादशे

श्यानांपुनरष्टमेप्यथपुनःस्याद्वाडशेवत्सरेकालेथद्विगुणेगतेनिगदितेगौ

णंतदाहुर्बुधाः ४० क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रेर्कविद्गुरुसितेंदुदि

नेव्रतंसत् ॥द्वि२त्री३षु५रुद्र११रवि१२दिक्१०प्रमितेतिथौचकृष्णादिमत्रि

लवकेपिनचापराह्णे ४१ कवीज्यचंद्रलग्नपारिपौमृतौ८व्रतेनधर्मगात्मये१२

ज्ञभार्गवौतथाननौमृतौ८स्तुनेपखलाः ४२ व्रतबंधेष्ट८षट्६द्वारि११धिक१२व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेयादस्याद चत्वारि लग्न स्यादि दिनत्रय ॥ चतुर्थी चैकतः प्रोक्ता प्रकावते गलग्रहाः ॥ ० ॥
नवेत्

नीचारिस्थः शुभोप्यसत् ४८ कृस्नेप्रदोषेण ध्यायेशनो निश्यपरे कके प्राक संध्यागर्जि
तेने ष्टोव्रतबंधो गलग्रहे ४९ क्रूरोनजो पापीपटुः षड्मे लग्न यज्ञार्थभाकृ तथा मूर्खो
रव्याद्यंशेननोक्रमात् ५० विद्यानिरतः शुभराशिलवे पापांशगते हि दरिद्रतरः चंद्रेस
स्वेबवर्ड्ड रवयुतः कर्णादिनिमे धनवान्खलवे ५१ राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रहन्ति स्व
पाठकः शाठ्योर्थवान्म्लेच्छसेवी केंद्रे सूर्यादि खेचरैः ५२ शुक्रे जीवेतथा चंद्रे सूर्यभौ
मार्किसंयुते निर्गुणः क्रूरखेटस्यान्निर्घृणः संयुते पटुः ५३ विधो सितांशगे सितेत्रि
कोणगे गुरौ तनौ समस्तवेदवित्व्रती यमांशगे तिनिर्घृणः ५४ सुचिष्ठ कृपोषन
पसांदिग १० विरुद्ध शर्करसंख्य सितति घयः मताद्वितियाष्टमी संक्रमणे चव्रते
व्रतध्यायाः ५५ अर्क १२ तर्क ६ त्रि ३ तिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमे रात्र्यर्द्धसाईभर

मृ. जिताशामितोः शुभाः त्रिषडायगाः ... खलाः षष्ठ्योगा २ ककके ४ स्योविधुस्तनो ४३ अथ
२४ चतुर्वर्णाधिपाः विप्राधीशौ भार्गवेज्यौ कुजार्को राजन्यानेनोषधीशो विशांच शूद्राणां

त्वंत्यजानांशनिस्याच्छाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ४४ शाखेशवारतनुवीर्य

| विप्र | क्षात्र | वैश्या | शूद्रा | अंत्यजः |
|---|---|---|---|---|
| गु.शु | सू.मं. | चं. | बु. | श. |

मतीवशस्तं शाखेश सूर्यशशिजीवबलेव्रतं
सत् जीवेभृगौरिपुगृहे नृहे विजिते च नीचे स्याद्
दशास्त्रविधिनारहितो व्रतेन ४५ जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते निघ्नाधिकोव्रतो
आयगर्भे पिविप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ४६ जयगुरुपलेख बटुकन्याज
न्मराशेस्त्रिकोण २।५ यै द्वि २ लाभग ११ ७ षष्ठो गुरुः प्रदद्याद् ३ घे १० जायान्यत्रनि
दितः ४७ स्वोच्चेस्वभेस्वमैत्रेवा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरौ रिष्फ १२ ष्ट ८ तुर्य ४ गो पीडे २४

| शाखेशाः | |
|---|---|
| ऋग्वेद | गु |
| यजुर्वेद | शु |
| सामवेद | भौ |
| अथर्ववेद | बुध |

स्थानमध्यास्थितक्रमात् ५६ ... उत्पातान्ध्ययना

२५ तत्त्वपि शांतिरर्वकं तत्स्यात् ५७ वेदः क्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासु पौष्णक

रमैत्रमृगादितीज्ये श्रोवेष्णुचाश्विवसुपुष्पकरोत्तरेशा कर्णेमृगांत्यलघुमैत्रधनादितोस

त् ५८ नांदीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पेलग्नांतरे नहि शांत्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योन्य

थानसत्॥ ५९॥ इति व्रतबंधः विचेत्रव्रतमासादाव भौमास्ते विम्रमिजे क्षुरिकाबं

धनंशास्त्रेन्नपाणंप्राग्विवाहतः ६० केशांतेषोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसेशुभे व्रतो

क्तदिवसादौ हि समावर्तनमिष्यते ६१ इति श्रीदैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविरचि

ते मुहूर्तचिंतामणौ सपरिकरसंस्कारप्रकरणं पंचमं ५ भार्यात्रिवर्गकरणं

शुभशीलयुक्ताशीलंशुभं भवति लग्नवशेन तस्याः तस्माद्विवाहसमयः परिचिं २५

२६ हं द्द।१।यस्मिन्वोदयो विजय एवभवेद्वसुधापपतेः २ रिपुजन्मलग्नभमथाधिपोनयो

स्ततएवचोपचयसद्मचेन्नवेत् हिबुकेथवा नेथवा शुभवर्गकस्तनौ यदिमस्तकोदयगृहं तदा

जयः ३ यदिपृष्ठतनावसुधारुचिराशुभवस्तुयदि श्नितिदर्शनगं यदिपूर्णतिचारगतोपि

शुभं ग्रहदृष्टयुगं चरलग्नमपि ४ विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेथचंद्रे स्मृतिमयमदनसंस्थेल

ग्नगेभास्करेपि हिबुकनिधनहोरायूनगेनापिपापेभपदिभवति भंगः प्रश्नकर्तुस्तदानी

५ त्रिकोणकुजात्सौरिशुक्रजज्जीवायदैकोदिवानोगमोर्कोच्छजीवा वलीयोस्तमध्ये

नयाग्र्येग्रहः स्यात्सुकीयांदिशं प्रत्युतासौ नयेच्च ६ प्रश्नेगमस्थिगीशात्तवेदः पंचमगोथः

वोभ्याद्बलयुक्तः स्वामाशां नयतेसौ ७ धनुर्मेषासिंहेषुयात्रासमस्ताशनिज्ञोशनोरा

शिगे चैवमध्या॥ रवौ कर्कमीनालिसंस्थे तिदीर्घा जनुः सप्तपंचत्रितारा च नेष्टा ८।

मु० येष्ठभोगमः अथशीनलग्नउतरा दंशाके चलितस्यवक्रमिह वर्ज्यमाहते ४२ जन्मराशितनु
४२ तोष्टमेथवास्यारेभाचरिपुभेतनुस्थिते लग्नगास्तदधिपायदायवास्फुरंतंहिन्दपतेर्म्र
तिप्रदं ४३ लग्नेचंद्रेवापिवर्गोत्तमस्थेयात्राप्रोक्तावांछितार्थैकदात्री अंभोराशौवातदं
शेप्रशस्तं नौकायानसर्वसिद्धिप्रदायी ४४ दिग्द्वारभेलग्नगतेप्रशस्तायात्रार्थदात्रीजय
कारिणीच हानिंविनाशंरिपुतोभयंचकुर्यान्नयादिक्प्रतिलोमलग्ने ४५ राशिस्वजन्मसम
येशुभसंयुतोयोयःस्यादिभान्निधनगोपिचदेशिसंज्ञः लग्नोपगः [illegible] घृ
पयोगेगमोविजयदोमुनिभिःप्रदिष्टः ४६ सूर्यःसितोभूमिसुतोथराहुःशनिःश
शीज्ञश्चबृहस्पतिश्च प्राच्यादितोदिक्षुविदिक्षुचापि दिशामधीशाःक्रमतःप्रदि ४२
ष्टाः ४७ [illegible] दिग्धीशेगच्छेद्दलीशः लालाटिनित्यस्थितेयादरिमेनाम ४८ प्रा

[illegible] हन्तुदित्यामिते दुष्ट [illegible] न्यूह
३९ स्थवोधासवैरेवयात्राप्रशस्ता ९ नपूर्वदिशिशक्रभे [illegible] गुरु सोरिवारे तथान याजपाद्भे
गुरौयमदिशंत्र्यजभृगुकार्कयोः नपादिदिशिधात्रभेकुजबुधेऽर्यमर्क्षे तथाजसौम्यककुभिज्ञ
जेत्यजेयजीवितार्थीबुधः १० रवौज्ञेध्रुवमिश्रमैत्रेनृपतेर्यानमध्याह्नकेतीक्ष्णा
ख्येरपराह्णकेनलघुभेनेर्पूर्वरात्रेतथा मेत्रारव्ये [illegible] मध्यरात्रिसमये चोग्येलघानो चुरैरा
च्यंतेहरिहस्तपुष्यशशिभिःस्यात्सर्वकालेशुभा ११ पूर्वोज्ञिति [illegible]
विंष्टो ५२ [illegible] तुरंगजाःस्युः स्वातीविशाखेंद्रभुजंगमानां [illegible] षिद्धमशुभमि
तास्य १२ रवौईमाग्नेयमथानिलानांत्यजेद्विचिष्यादिषमो [illegible] म्
गमनेजयेप्सुः स्वातीमघा चोशनसोमतेन १३ तमोमुनातारास्मृताविषमा संख्यास्यु ३९

मु०
४१

मीनेषेकुंभजके जीवे यातरां नशस्ता: २९ मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्येंदुपौत्यभं
[illegible] ग्राहे [illegible] नभे [illegible] तभं नसत् ३० भूमिश्च [illegible] दिश्यं [illegible] ३२
[illegible] केश [illegible] ३ [illegible] मेषादिधातलग्नानि यात्रायांवर्जयेत्सुधी: ३१
[illegible] शिववक्र यो [illegible] विष्ण [illegible] के रुता [illegible] शक्र रसा [illegible] दस्ता रंगतिथ्य:
[illegible] दिशो [illegible] मावसवस्त्र [illegible] पूर्वनस्या [illegible] यय: सन्मुखवामगान शस्ता:
[illegible] कौबेरातो वै [illegible] रात्येन कालो वा रे कौद्ये सन्मुखे [illegible] सन्मुखे ६ प्रा:
वर्जनी [illegible] संज्ञौ विचिंत्यो ३३ [illegible] दिक्षु [illegible]
[illegible] मग्नेयदिक्संस्थं परिघं नावलंघयेत् ३४ [illegible]
हूतादिग्भेरवं प्रदक्षिणगतानि दिशो [illegible] केपि परिघं प्रलंघ्य न [illegible] ४१

30

[illegible] कनुगृह्यराप्त ३५ [illegible] कायात्रासु [illegible]
सुतज्ञै: [illegible] केंद्रगतोस्य च गोलग्ने दिनं [illegible] निषिद्धं ३६ सौम्यार्[illegible] सूर्यविधू
तदोत्तरां प्राचीं व्रजेनो यदि दक्षिणायने प्रत्यग्यमाशां [illegible] दिवानिशं भिन्नायने [illegible]
धोन्यथाभवेत् ३७ उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद्वा [illegible] त्रिधोच्यते सन्मु
खएव मुक्तो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ३८ वक्रास्तनीचोपगते भृगो: सुते राजा प्रज
न्याति वशं हि विद्विषां बुधोनुकूलो यदि तत्र संचलन् रिपून्जये नैव जय: प्रतीदुजे ३९
यावच्चंद्र: पूषभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रो [illegible] दक्षे मध्ये मार्गे भार्गवास्ते पिराजा
तावत्तिष्ठेत्सन्मुखत्वेपि तस्य ४० कुंभकुंभांशकौ त्याज्यौ सर्वदा यत्नतो बुधै: तत्रग
[illegible] ते रर्थनाश: पदे पदे ४१ जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहो भवतस्तदा तदुद

29

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वं

भोजीवपक्षोमतस्वापिभोग्याः तदाक्रांतभं क्रूरनरो सं ज्ञमुक्तं ततो ऽक्षेंड स मवे क्रूरू
नामा १० मार्त्तंडेमृतपक्षगेहिमकरश्चेज्जीवपक्षेस्थभाययात्रास्याद्विपरीतगेसबकरोद्वो
जीवपक्षेस्थभा ग्रस्तर्क्षेमृतिपक्षतःस्थभकरंयस्मात्तथाकर्त्तरस्यायोदुःस्थितिमान
रविर्जयकरोतोद्वोतयोर्ज्ञी वगो १५ स्वात्यंतकाद्विवसुपौ स्फुकरः भुराधादित्यष्कवांशि
विषमाग्नितिथयोऽकुलास्युः स्वर्येंडमंदगुरवश्चकुलाकुलोज्ञोभ्मलांबुपेशविधिगं
स्वी ४ दशाषड्द्वितिथ्यः १६ पूर्वा ज्यमपेंडकर्णदहनद्वीशेंदु चित्राभ्सयाम्भकारोकुलसं
नकाभ्मतिथयोः केंशष्टवेदेम्मिताः यायीस्यादकुलेजयीचसमरेस्थायीचतद
कुलेसंधिःस्यादुभयोःकुलाकुलगणेभमीशायौदुघतोः १७ स्युर्द्दमेंदस्तनु
ष्पोरगवसुजलपद्मीशमैत्रा ध्या थैमाम्याजांघ्रींद्रकमोद्दितिपित्र्यवनोद्भ्यधो

त्यंतकष्टं २३ तिथ्यृक्षवारयुतराइगजा लग्नइतसास्यानत्रय
रवी मक्षेमनक्षतिरपोचरमेमतिः स्याम्स्थानत्रयेनकुलितोस्थजयेनिरन्तो॥
२४ रवेर्भतोऽङ्गप्लेम्मितिर्नगा७वशेषिताद्युगा२७ महाइलीनरस्तत्रिवपिम
ताऽऽद्ध्मनोभवेत् २५ शशांकभं स्वर्ष्यभतोयमत्यंयद्द्विति द्वा दिनवास
रेण युतेनवाप्तंनग७शेषकंचेत्याबीवंदद्भमैनेतिशस्तं २६ भपंचांक
संगदिग्वह्निसप्तवेदाष्टशाकोम्म... नंदः मेषादीनांराजसेवाविवादेव
ज्योयुद्धायेचनान्यत्रवर्ज्याः २७ गोस्त्रीमिथैघान्तिथिसकर्णो भद्रान्त्यु
ककर्कटकेयनंदाको राजयोनिकेधटेचरिक्ताजयायदु कुंभेहरेनेषाम्साः २८
नक्रे भौमोगोहरिस्त्रीषुमंदश्चंडोद्वंद्वेकोजभेजश्चाककैं भुकः कोदंडालि
१ २ ५ ६ ३ ७ ४

स्थिरंचित्त दुनाराणां ६:३

ष्युर५कों१२स्वा८ विश्वे१३ गो१९रुद्र११शाक्रे१४ नामाक्षरंत्रयं३ अज१६ग्न२व्धि४ष्व५गद्द्दि
ग्वैक्रि३वि म्रे८पु१२क्षो२नगे७क्षा४यः ९ कुबधान्ने जय नंदोरवरकांतमनोरमस्तु मुखड
मुखोग्रम अहितेधनेंदंनाशंचाकेंदंविपुलविजयारव्यंस्यात् १० पिंडेनवोर२कोरगद्द
गजा८ग्नि३नाग८नागा८व्धि४नागे८शुणि ले कमेण तिथाजितेनाग८नगां१क२स्वर्य
१२नाग८र्क्षे२७तिथ्या५र्क्षे२१रवभानु१२०भिभ्व११अयोवारोंशकोद्रव्यमरणम्रक्षंति
थियुति: आयुश्चायघ्यहेशार्क्षे गृहभैक्यंमतिप्रदं १२ गेहाद्यारंभेर्कभात्दत्स्वप्नीषे
रामे३र्दाहो वेद४भैरग्रपादे शून्यंवेदैः४पृष्ठपादे स्थिरत्वंरामै३पृष्ठेश्री र्युगे४र्दक्ष
कुक्षौ १३ लाभो रामैः३पुच्छगेःस्वामिनाशो वेदैर्नैस्वं वामकुक्षौ सुखस्थैः रामैःपी
डा संततं चार्कधिष्ण्याद्भै७रुद्रै११र्दिग्भि१०रुर्कैर्हासत्सत् १४ कुंभेर्केफाल्गुनेमासं
४० तिमभदिनकरर्क्षाणिपथ्यादिशाहो १८ धर्मगेभास्करे वित्तमोक्षे शशिवित्तगे धर्ममो
क्षस्थितःशस्यते कामगेधर्ममोक्षार्थगःशोभनोभोरवगे केवलंधर्मगःप्रोच्यते १९
पौषेपक्षत्यादिकाद्वादशेवतिथ्यो माघ [illegible] तीयादिकास्ताः शामान्तिथंस्युस्तनी
यारिवत्सर्यानेप्राच्यादौफलंतत्रवक्ष्ये २० सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च शून्यंनैःस्व
निःस्वतामिश्रताच द्रव्यक्लेशोदुःखमिष्टाप्तिरर्थो लाभःसौख्यंमंगलंवित्तलाभः २१
लाभोद्रव्याप्तिर्द्धनंसौख्यमुक्तं भीतिर्लाभोमृत्युरर्थागमश्च लाभःकष्टंद्रव्यला
भोसुखंचकष्टंसौख्यंक्लेशलाभोसुखंच २२ सौख्यंलाभःकार्यसिद्धिश्चकष्टं
क्लेशःकष्टात्सिद्धिरर्थोधनंच मृत्युर्लाभोद्रव्यनाशश्चशून्यं शून्यंसौख्यंमृत्युर ४०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] दीर्घायां [illegible] नमीन र्क्षेन
दयापिदलिले. ९ लग्नेनन्मर्क्षतन्वो [illegible] तिगृह मदित [illegible] कं दे [illegible]
वलघतन्नृचादि [illegible] येर्यं च प्रशाशसं [illegible] दग्रमपा [illegible]
श्चवक्रिग्रहदिवसाविदाहोक्तदोषाग्नेष्टा: १० इति [illegible]
[illegible] नीदि [illegible]
यड [illegible] कस्तेनेशैदिझिंत मसौयामः [illegible]
जैः [illegible] काकिएयस्तनयोश्चनदिवरतोग्रस्याधिका सोर्धदोषदा [illegible] द्विजवेश्य [illegible]
[illegible] कुभौलिंफ्पौगे
[illegible] राशीजं [illegible] तः १ गोसिंहे नक्रे मिथुनेति [illegible] एकोनि
नाम्य [illegible] कौ [illegible] मेषघटे [illegible] गा: [illegible] विक्रमा विभकाभ्र
नेत्र [illegible] हताद्विति [illegible] यहतेंड नागे: [illegible] दि [illegible] तिविस्तति
पाश्चिमि: २१६ शेषमितोहिपिंड: २ स्वेष्टायनक्षत्रभयोध दे [illegible] ह [illegible] दि [illegible]
परग्रु [illegible] सिहकर्कपोष नक्र [illegible] नगा [illegible] राशि [illegible] जरका
लिंगेसक्रु [illegible] वरुणस्वामिवर्स्वकर्कपुष्ये [illegible] तीयेहं [illegible] त: प्रवे
शा: १५ केश्चिन्मेषरवौमधौ [illegible] वुचौक [illegible] भाद्रेसिं [illegible] घटे [illegible] जिंवो
जै: लौमगेपौषके माघेनक्रघटे [illegible] मनिगादि [illegible] जैन [illegible] कापौचनपोष
जुष्पिनस [illegible] स्मादिमासाद्भवेत् १६ [illegible] नेन [illegible] दि [illegible] राश्यां तथाप
श्चिमास्यम [illegible] दित: [illegible] नवम्यां [illegible] मासात [illegible] दंनि १७ [illegible] के
रिक्ता [illegible] नेचरो नेगे विपंचके [illegible] गि ग: खले: १८ दे
वालयेगेहदिधौजलाशयेरा [illegible] मीनार्के [illegible] र्के मगार्क
तस्त्रिसे [illegible] विदि [illegible] भवेत् १९ [illegible] देया [illegible] ध्यके [illegible] नापास्वे [illegible] ४२

मु० णं॥ ॥राज्याभिषेकः शुभउत्तरायणेगुरौ विदुक्तेकेहदितेर्वलान्विते॥ गौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपे
३८ नीचेत्वरिकारनिशन्नलितेद्युचे॥ १ ध्रुवक्षिप्रमृदुकर्णे॥ इति॥ दयेचोपचयेशुभेत त्रि२
नो पापेत्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः केंद्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः २ पापैस्तनौ रुक्
निधनेमृतिः सुतेपुत्रार्त्तिरर्थव्यय२।१२गैर्दरिद्रता॥ स्यात्केवलसौम्यपदोषदानोबु३।४गोःस
र्वैशुभं केंद्रगतैः शुभग्रहैः ३ गुरुर्लग्न केले१।५।१०कुजोशेदसितःखे१० सराजा
सदामोदतेराजलक्ष्म्या तृतीयौय३।११ गौसौरिरूदौरव१० वंध्रे४ शुक्रेदारिजीस्थि
४६ रास्थान्त्रपस्य ५ इतिराज्याभिषेकःप्रकरणम्॥ ८॥ यात्रायां विदितजन्मनां न
पाणंदातल्योदिवसमहजन्मनां च प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतैर्विज्ञातेस्य शुभमशुभे
बुधःप्रदद्यात् १ जननराशितनू यदिलग्नगेतदधिपोयदिवातनएववा त्रिरिपुर्षायगा ३८

४८ दशोविते ४ धनादिकासर्वदिशिप्रजेसुखकार्यहनौ
रेतथा प्राच्यांइपेभाग्यमयोर्गजेथवायव्यादुदकश्रदयमेद्दि जा
दितः ५ गृहेशतस्त्रीसुखवित्तनाशोऽकेंद्रीज्यस्तु केविवलेस्त
नीते कर्तुःस्थितिर्नोविधुवास्तनौभेष्व स्थितेषष्ठगनेरवा
निःस्यात ६ भंनागट तष्ट्व्ययईरितोसौ ऋवादि नामाक्षरयु
क्तपिंडः लघोगुलेशरिंडकृतांतमपाक्षंशाभवेद्युर्नधुभो
तकोत्र ७ दिक्षस्वीदितःशूलाध्रुवाभ१ वौ२ लाच४ ग
जाः शूलाध्रुवांगसंयोगःसैकोवेशमध्रुवादिकं ८ ति
३७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मास ३

मु० श्रीदैवज्ञानंतसुतरामविरचितेमुहूर्तचिंतामणौ विवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥ द
३७ समाद्वि ७ पंचांकपक्ष... दिनेषु विवाहाद् वधूप्रवेशोऽपि ... शुभः परस्ताद्वि
षमा... दिनेषु ५ वर्षात् ततो यथेष्टम् ॥ १ ॥ ... त्रिप्रमृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु ... मघानि
ले ... वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार... रविवारे ॥ २ ॥ ज्येष्ठे पतिज्येष्ठमथाधिके प
तिं हंत्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ । श्वश्रूं सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं तातं मधौ तातगृहे
विवाहतः ॥ ३ ॥ इति वधूप्रवेशनं ॥ चरेऽब्दे ओजहायने घटालि मेषगे ॥ १ ॥ चाश्वौ
रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे । नृयुग्मामीनकन्यकातुलावृषे विलग्न
के द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्वपे मृदुश्रुतौ ॥ २ ॥ दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि
स्यात् ... गच्छेत्तु नैव शिशुगर्भिणी नवोढाः । बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा चेद्वंध्या भ
वति च ... ॥ ३ ॥ पित्र्ये गृहे चेत्कु
चोदयो न पश्चादपि नैव दोषः । नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि ॥ ४ ॥ पि
चपुष्यसंनवस्त्रदानदोषः प्रतिशुक्रसंभवः । भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां
भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥ ५ ॥ इति द्विरागमनप्रकरणं ॥ ॥ स्यादग्निहोत्रविधिरु
त्तरगे दिनेशे मिश्रध्रुवांत्यशशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये । रिक्तासु नो कुजशशीज्य
... नीचे नास्तंगते न दिजितेन च शत्रुगेहे ॥ १ ॥ नो कर्कनक्रझषकुंभनवांशलग्ने
... नो रविशशीज्यकुजत्रिकोणकेंद्रर्क्षषट्त्रिभवने च परैः [illegible] लाभष
ट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥ चापे जीवे तनुस्थे वा मेषे भौमेऽथवा रवौ ।
नो षट्कायेज्ये रवौ वा सा ज्ञाता ग्निर्मथ्यते ध्रुवम् ॥ ३ ॥ इत्यग्न्याधानप्रकर

३७ (right margin, first leaf)
40 (pencil)
३९ (pencil, left of last line)

मु० यामित्रदोषो गोधूलिः सामुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु सस्ता ९९ पिंडीभूते दिनकृति हेमंतर्तौ स्या
३६ दर्धास्ते तपसमये गोधूलिः संपूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभ [illegible] कार्य्ये दो
१०० अस्ताने गुरुदिवसे सौरे सार्के लग्नान्मृत्यौ ८ रिपुभवने ६ लग्ने १ चंद्रो कन्याना
शस्तनु १ मर्द ७ मृत्यु ८ स्थे भोगे वेदुर्लाभे ११ धन २ सहजे ३ चंद्रे सौख्यं १०१० मेषादिगेर्के
दृशारा ५८ नगाक्षा ५७ सप्तेषवः ५७ सप्तशरा ५७ गजाक्षाः ५८ गोक्षा ५९ खतर्काः
६० रूपरसाः ६१ कुतर्काः ६१ कंगानि ६१ षष्टिः ६० नवपंच ५९ भुक्तिः २ संक्रांतियातघ
स्रा द्यैर्गतिर्निघ्नी खषट्हृता लब्धेनांशादिना योज्यं पातर्क्षे स्पष्टभास्करः ३ तनोरि
ष्टांशकात्स्वेन वांशाद्घ्रा१० संगुण्य रामा ३ प्तालब्ध मंशाद्यंतनोर्वे गादिसाधने ४
अर्कात्स्वेष्टात्सायनाद्भोग्यभुक्ते भागैर्निघ्नात्स्वोदयात्खाग्निभक्तात् भोग्यं भुक्तं चांत ३६
रालोदयाढ्यं षष्ट्याः ६० भक्तं स्वेष्टनाड्यो भवेयुः ५ चेत्तन्वार्कौ सायनावेकराशौ तद्विश्ले
षघ्नोदयः खाग्नि ३० भक्तः स्वेष्टः कालो लग्नमर्केयदार्कात्रे ः शेषो ० कोत्स पञ्चान्निशा
यां ६ [illegible] पातदग्धतिथिभिर्दृष्टयोगांस्तथा वज्रैज्योशनसामथाप्तमयनं
ध्या ति [illegible] यहीतथा गंडांतं चसविष्टिसंक्रमदिनं तत्त्वंशपान्तं तथा तत्त्वं शेशाविधून
याश्च रिपुगान्नाचस्य वर्गोत्तथा ७ सेंदुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिंचेडायुधं खा
र्जूरं दशयोगयोग [illegible] तं जामित्रलत्ताव्यधं वाणेपग्रहपापकर्त्तरितयातिथ्यर्क्षवा
रोत्थितं [illegible] यामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि ८ क्रूराक्रांतविमुक्तभंग्रहण
भंयत्क्रूर [illegible] भंचे धोत्पातहतं चकेतुहतभं संध्योदितं भं तथा तद्वच्चग्रहभिन्नयुद्धग
तभं सर्वानिमान्संत्यजेदुद्वाहे शुभकर्मसु ग्रहकृतान्लग्नस्य दोषानपि १०९ इति

मु० च्चपापविद्धयुक्तनवांशदोषः ८९ केंद्रेकोणेजीवज्ञायेरवौवालग्नेचंद्रेवापिवर्गोत्तमस्थे सर्वे

३५ दोषानाशमायांतिचंद्रेलाभेतद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः ९२ त्रिकोणेकेंद्रेवामदन७रहितेदोषशत

कंहरेत्सौम्यः शुक्रोद्विगुणमपिलक्षंसुरगुरुः भवेदायेकेंद्रे ऽगपउतलवेशोयदितदासम

हंदोषाणांदहनइवतूलंशमयति ९० दौदौरजन्मर्गलोःपंचेंषदौरवोसार्द्धत्रयो३।३०गुरो॥

रामा३मंदाशुक्रेत्वारिसार्द्धकेकं१।३०विशोपकाः२१ ... सितोर्कःस्वक्षरस्तनुस्तनुजो

55 मित्रपःस्याद्दयितोमनःशशी एतद्वलंसंप्रतिभाव्य ... केस्तेवाफलंसंभवदेद्विवाहतः ९२

क्षत्रेपक्षेसौरिकुजार्केपिचवारेवर्जेनक्षत्रेयदिवास्यात्करपीडा संकीर्णानांतर्हितादुर्द्दनला

नशीतिपार्श्वेसर्वभवतीहस्थितिरेषा ९३ गांधर्वादिविवाहेषुद्वे मु० २

दनेत्र२गुणें३दव१ कुा१युगां४गाद्गनि३भ१रामां३त्रिपद्यामशुभा

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | २ | ३ | १ | ४ | ६ | ३ | १ | ३ |
| ८ | मु | ८ | मु | [illegible] | | | | |

शुभाः ९४ विधोर्वलमवीक्ष्यवादलनकंडनंवारकंगृहांगणविभूषणान्यथचवेदिकामंडपा

न् विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत्तथोद्वाहतोनपूर्वमिदमाचरेत् त्रि३नवरषण्मितेद्वासरे

२५ हस्तो१च्छ्रायावेद४हस्तैःसमंताचुल्यावेदीस ... नोवामभागे युक्तंघस्रै ... हीनेन

पंचसप्ताहेस्यान्मंडपोद्वासनंसत् ९६ मेषादिराशिजवधूवरयोर्वटोश्चतैलादिलाप

नविधौकथितात्रसंख्या शैलादिशःशरदिगक्षनगाद्रिवाणवाणक्षवाणगिरयोविबुधै

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| ७ | १० | ५ | १० | ५ | ७ | ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ |

रुक्तकेश्चित् ९७ सूर्य्येंगनासिंहघटेषु शैवेस्तंभोलिकोदंडमृगेषुवायौ मीनाज

प्यो० २ कुंभेनिरृतौविवाहेस्या ... ग्निकोणेरषयुग्मकर्के ९८ नास्याम्रक्षंनतिथिकरणं

56 नैवलग्नस्यचिंतानोवावारोनचलवविधिर्नोमुहूर्तस्यचर्चा नोवायोगोनमृतिभवनंनैव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मु० विषुवायनेषुपरश्र्वमध्यमांदिवसोत्यजेदितरसंक्रमेषु[illegible] घटिकाःषोडशाप्युभक्तयाविधौ
२४ परतोपिपूर्वमपिसंत्यजेद्बुधः ७८ देवर्क्षयुग्दंरकर्कनवो६धनुःशष्ठो ८९नाड्योंऽकाः२रवि[illegible]१०१६०
क्रमात् कुर्याःसंक्रमणेर्कादेःमायोर्केस्यातिनिंदितः ७९ घस्रेतुलालीधअवधिरोमृगा
श्वौ१०।९रात्रौचसिंहाजवृषाधा१।१२दिवांधाः कन्यान्नयुक्कर्कटकाः६।३।४निशांधादिने
घटोंत्यो११।१२निशिपंगुसंज्ञः ८० वधिराधन्वितुलालयोऽपराह्णेमिथुनंकर्कटकोंगना

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
| ३३ | २ | ९ | ६ | ८७ | २ | १६० |

निशांधाः दिवसांधाहरिगोक्रियास्तकुब्जामृगकुंभांतिमभानि
संध्ययोर्हि ८१ दारिद्र्यंवधिरतनौदिवांधलग्नेवैधव्यंशिशुम
रणंनिशांधलग्नेपंग्वंगेनिखिलधनानिनाशमीयुः सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्नदोषः ८२
कार्मुकतौलिककन्यायुग्म९।७।६।३लवेऋषभ२गेवा यर्हिभवेदुपयामस्तर्हिसतीखलु ३४

न्या ८३ [illegible]नचपरिलेयाकाचनवर्गोत्तमा[illegible] [illegible]चरलग्नचर[illegible]
नौ[illegible]तिकुर्यात ८४ व्यये१२शनिःखे१०वनिजस्तृतीये३भृगुस्तनौ[illegible]
नौ[illegible] [illegible]८५ [illegible]
[illegible]सा: लग्नेहृकविग्लौऽस्वरिपौहमतौ[illegible]ले[illegible] [illegible]३।११।६गः क्षितिसुतोद्विगुणाय[illegible]
याष्टषट्३।११।८।६सुरविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायारि३।११।६गः क्षितिसुतोद्विगुणायराशि
याष्टषट्३।११।१।८।६सुरविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायारि [illegible] व्यय ८।३।७।६।१२
११गोज्ञः सप्तव्यया७।१२।८ रहितोज्ञगुरुसितोऽष्टत्रिघ्नषट्व्यय ८।३।७।६।१२
गृहान्यरिहत्यशस्तः ८६ पापोकर्त्तरिकारकोरिपुगृहेनीचेस्तगोकर्त्तरीदोषोनैवसिते
रिनीचगृहगेतत्षट्दोषोऽपिन भौमेस्तरिपुनीचगेनहिभवेद्भौमोऽष्टमोदोषकृन्नीचे
छारि२ नीचनवांशकेशशिनि[illegible]१।१२।८।६दोषोपिन ८८ [illegible]मभप
[illegible]यातिथ्यंध[illegible]णवधिरांगम्युखाम्रदोषः [illegible]तिदि[illegible]रितद्धि[illegible]कोणव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ध्न२धि४तके ६दुसंख्ये रोगी वह्नी राजचौरो च मृत्युर्वा एष्वायं दाक्षिणात्य प्रसिद्धः ७१ र

३२ सद्गुण ३ शशि १ नागा ८ ब्ध्या ४ द्य संक्रांतियातांशक मितिरथ तत्रांकैर्यदा पंचशेषाः रुग १

नल २ नृप ३ चौरा ४ मृत्यु संज्ञश्च वाणे न वह्नितः ५ रश्चे षेशेषकेक्ये समाख्यः ७२ रात्रौ चौर

रुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा संध्ययोर्मृत्युस्त्वाप्य शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमे ग्नि चौरो र

वौ रोगी यव्रतगेहगोपनृप सेवा पानपाणिग्रहे वर्ज्योश्च क्रमतो बुधे रुग नलक्ष्मापाल

रसं ६ चौरा मृतिः ७३ नाशं ३ १ त्रिकोणे २ ५ चतुरस्र ४ ८ मस्ते ७ न्यंति खे दाश्च रणे निशद्या

मंदो खरुर्भ निस्युतः परे च क्रमेण संस्मरेणं दृशो भवंति ७४ यदा लग्नांशे शो लवमथ तनुं

पश्यति युतो भवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पं रचयति लवघ्न न स्वामी लवमदनमं ७ भं ल

ग्नमदनं ७ मप प्रश्ये द्वाव धाः शुभमितरथाज्ञेयमशुभं ७५ [illegible]

[illegible]

लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद्वरस्य लवघ्न नपो शायुनं लग्न

पो ७ स्तं मिथो वेक्षते स्याच्छुभं कन्यकाभाः ७६ लवपति शुभ मित्रं वीक्षते शं तनुं वा परि

णायन करस्यस्या च्छुभं शास्त्र हृष्टं मदनलवप मित्रं सौम्यमं शायुनं वा तनुमदनगृहं वेक्षी

ते शर्म वध्वाः ७७ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ७० ॥

मु० घ्निः रवेटपत्समः वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्द्धयामकः ६३ शक्रा१४र्क१२दि१०ग्वसु८
३२ रसा६द्व्यय४ब्धिरनः कुलिकादेः रात्रौ निरेका१स्तिथ्यंशाः शनौ चान्योपि निंदितः ६४ चापां
त्यगे९।१२ गोरथघटगे११पतंगे कर्कीजगे४।२ स्त्रीमिथुनः६।३ स्थिते च सिंहालिगे५।८ नक्रधटे
१०।७ समाः स्युस्तिथ्यो द्वितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः ६५ लग्नाच्चंद्रान्मदनभवनगे खेटेनस्या
दिह परिणयनं किंवा बाणाशुगमित५५लवगे जामित्रे स्यादशुभकरमिदं ६६ स्वोच्चे वा
वा स्वभवने स्फुरदंशुजालः सौम्यालये हितगृहे शुभवर्गगो वा या मित्रका परिसंचितदोषरा
शिं हत्वा ददाति हि कुलाः सुखमेव चेइः ६६ वशिष्ठः एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त
र्युदयास्तदोषाः नश्यंति चंद्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्कोभ्युदये तु दोषा ६७ उपग्रहर्क्षं कु
रुबाह्लिकेषु कलिंगवंगेषु च पातितं भं सौराष्ट्रसाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे ३२
॥

६८ शशांकसूर्यर्क्षयुते भशेषे ख०भू१युगो४ग३ानिद
दशो१०शा११तिथ्य१५ नागेंद्र१८वो१९केंइमिता
१९ नरवाश्चेद्भवंति चैते दश योगसंज्ञाः ६९ वा
ता१भ्रा२ग्नि३महीप४चौर५मरणं६रु७ग्वज्र
८वादाः९क्षति१०र्योगाके दलिते रसमे मनु१४
युते योजेत्तु मैके हितो मंदास्रादश संमितास्तु
मनुभिः १४रेखाः क्रमात्संलिखेद्वे धोस्मिन्ग्रह
चंद्रयोर्न शुभदः स्यादेकरेखास्थयोः ७० ॥
...नाद्यायातं तिथ्योंकतष्टाः शेषे नाग८

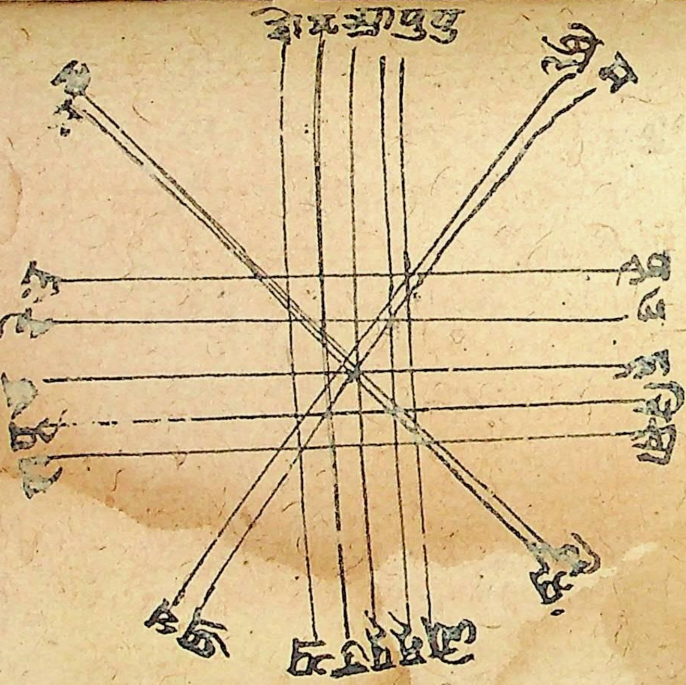

इति दशयोगचक्रम् ॥

मु० वेंद्रा१५ ५१ शिवोजपादादष्टौस्युर्भेशाज्जदितिजीवकौ विष्णर्कताष्ट्रमरुतोमुहूर्त्तानिशिक्री
३९ र्त्तिता ५२ ग्वानर्यमाब्रह्मरक्षश्चसोमेकुजेवह्निपित्र्येबुधेचाभिजित्स्यात् गुरौतोयरक्षौन्द्रो
ब्राह्मपित्र्येत्रानावीशास्तर्यामुहूर्त्तानिषिद्धाः ५३ निर्वेधैःशशिकरमूलमैत्रपित्र्यब्राह्मां
त्योत्तरपवनैःशुभोविवाहः रिक्तामारहिततिथौशुभेऽह्निवैश्वप्रांत्यांघ्रि [illegible] तितिथि१५भा मु
गतोभिजित्स्यात् ५४ वेधोन्योन्यमसौविरंच्यभिजितोयाम्यानुराधर्क्षयोर्विश्वेंदोर्हरि
पित्र्ययोर्ग्रहस्ततोहस्तोत्तराभाद्रयोः स्वातीवारुणयोर्भवेन्निऋतिभादित्योत्तयोफाल्यु
योःखेटेतत्रगतेतुरीयचरणद्योवाऽन्तीयद्वयोः ५५ शाक्रेज्येष्ठातभानिलेजलशिवेपौष्णा
र्यमर्क्षेवसुद्वीशेवैश्वसुधांशुभेहयभगेसार्पानुराधेमिथः हस्तोपांतिमभेविधातृविधि
भेमूलादितीत्वष्ट्रभाजांघ्रीयाम्यमघेकृशानुहरिभेविद्देकुभ्रूद्रेरिके ५६ रूपाभिकू ३९

रमुक्तानिक्रूरविद्धानियानिच मुक्ताचंद्रेणमुक्तानिशुभार्हाणि [illegible] ५७ शराकृतैः
सिताःस्वपृष्ठेभंसप्त७गोर्९जातिर्२२शरैः५र्मितंहि संताडयंतेर्कशनी ज्यभौमाः सूर्या१२
१९तर्का६ष्ट्यग्नि३मितंपुरस्तात् ५८ हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगंडमूलयोगानां अं
नि४ तेयन्नक्षत्रंपातेर्षपतितंतत्स्यात् ५९ पंचास्याजौ५।११ गोमृगौ२।१० तौलिकुंभौ७।११
कन्यामीनौ६।१२ कर्कयली४।८ चापयुग्मे९।३॥ तत्रान्योन्यंचंद्रभान्वोनिरुक्तंकांते
साम्यंनोशुभंमंगलेतत् ६० व्याघातगंडव्यतिपातपूर्वेमूलांत्यवज्रेपरियालिगंडे
एकार्गलाख्योह्यभिजित्समेतोदोषःशशीचेद्विषमर्क्षगोर्कात् ६१ ३।२।५।२०।८
कृ१०।शक्र१४।नगा७।तिथ्य१२।क्तिथि१५।र्धृति१८।भ्रकृतेश्वपंच२१।२२।२३।२४।
२५ उपग्रहांस्सूर्यभतोब्जताराःशुभानदेशेवाङ्किकानां ६२ पातोपग्रहलत्तास्तुनेष्टा
॥
क्रु१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मु॰ तनयस्यबाणशैलाष्टपंचविशिखांसमराशिमध्ये त्रिंशांशकोविषमभेविपरीतमस्माद्रेकाणकाः
३॰ प्रथमपंचनवाः १।५।९ धिपानां ४० स्यात्क्षादशांशाइहराशितएवगेहंहोराष्टकंनवमांशकरू
पभाणः त्रिंशांशकंस्वषडिमेकथितास्तुवर्गाः सौम्यैःशुभंभवतिचाशुभमेवपापैः ४१ ज्येष्ठा
पौष्णभसार्पभांतघटिकायुग्मं २ चमूलाश्विनीपित्र्यादौघटिकाद्वयं २ निगदितंतत्स्यागंडांत ऋतुमती
कं कर्कोः४ लयं ८ झज १२ भांततोर्द्धघटिका ०।३० सिंहाप ५ धनु ९ मेषादि १ गा ऋणीते ५।९।१।५ घटि ग्रहयुक्ता
कात्मकं २ त्वशुभदं नेष्टातिथेश्चादि मं ४२ लग्नात्पापोहज्वन्तर्जयाद्धेस्यौपदौतदा॥ वर ४
कर्त्तरीनामसाज्ञेयामृत्युदारिद्र्यशोकदा ४३ चंद्रेसूर्यादिसंयुक्तेद्वारिद्र्यंमरणंशुभं सौ
ख्यंसापत्न्यवैराग्यंपापद्वयसुतेमतिः ४४ जन्मलग्नभयोर्मृत्यूराशौनेष्टः करग्रहः ए
काधिपत्येराशीशेमैत्रेवानैवदोषकृत् ४५ मीनो १२ क्षः २ कर्को ४ लि ८ मृग १० स्त्रियो ६ ष्ट २०

मेलग्नंयदानाष्टमगेहदोषकृत् अन्योन्यमित्रत्ववशेनसावधूर्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागि
नी ४६ मृतिभवनांशोयदिचविलग्नेतदधिपतिर्वानशुभकरंस्यात् व्ययभवनंवाभवतित
दंशस्तदधिपतिर्वाकलहकरःस्यात् ४७ खरामतो ३० त्यादितिवह्निपित्र्यभेरववेदतः ४०
केरदत्र २ नमःसार्पभे खबाण ५० तोमैध्रतिततोथमांबुपेकृतेर्भेगत्वाहमजीवविश्वभे ४८
मनो १४ ष्टहूदैवानिलसौम्यशाक्रमेकुपक्षतः २१ शौवकरे ११ एतोऽक्षनेत्रगाश्विता ३२ वु
ध्यभतोपयाम्यभेखचंद्र १० तोमित्रभवासवर्क्षतो ४९ कलेंगवाणैर्विषनाडिकाकृताव
न्त्यांत्यभेषविषनाडिकाध्रुवाः निघ्नाभभोगेनखतर्क ६० भाजिताःस्पष्टाभवेयुर्विष
नाडिकास्तया ५० गिरिशभुजगमित्राःपित्र्यवस्वंबुविश्वेऽभिजिदथचविधातापीद्र
इंद्रानलौच निकृतिरुदकनाथोप्पर्यमायोभगःस्युःक्रमतइहमुहूर्तावासरेबाण

मेषवृश्चि[illegible] ... ॥

मु० रव्यक्रत ३१ विषमात्कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं न सत् समात्स षष्ठंशुभं ज्ञेयं विपरी

२९ तेन शोभनं ३२ प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो ऽथो राशीश्वर सौहृदे

पि गदितो नाड्यृक्षशुद्धिर्यदि। अन्यर्क्षे शपयोर्वलित्व सखिते नाड्यृक्षशुद्धौ तथा ता

राश्यद्विवरेच राशिवशताभावे निरुक्तो बुधैः ३३ मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वंद्व

स्यापिस्यात्कणानोनदोषः खेटारित्वं नाशयेद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटं ३४ स

ज्येष्ठार्यमेशा नीराधिपभयुगयुगं दस्रभं चैकनाडी पुष्येंदुत्वाष्ट्रमित्रांतकवसु

नलभं योनिबुध्ने च मध्या वाय्वग्नीव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरास्याद्दं

पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसत् मध्यनाड्यां हि मृत्युः ३५ अकचटतपयश

वर्गाः खगेशमार्जारसिंहश्वनो सर्पाखुमृगावीनोनिजपंचमं वैरिणामष्टो ३६ रा २९

श्येको चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव नाडीदोषो नो गणानां च दोषो

नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ३७ कुजस्य शुक्रः सौम्यस्य शशिसूर्यचंद्रजाः कविभौमजीवशनि

सौरयोगुरुः। स्वराशिपाः क्रियमृगास्य मौलिकेंदुभतो नवांशविधिरुच्यते बुधैः ३८

| आदिनाडी | मध्यनाडी | अंत्यनाडी | सम | |
|---|---|---|---|---|
| ज्येष्ठा मूल | पुष्य मृग० | स्वाति विशा० | शु ५ | ५ |
| उ०फा० हस्त | चित्रा अनु० | कृत्तिका रो | बु ७ | १२ |
| आर्द्रा पुन० | भरणी धने० | हिणी अश्ले० | चं ८ | २० |
| शतभिषा | पूर्वाषाढ | मघा उ०षा० | श ५ | २५ |
| पूर्वाभाद्र० | पू० फा० | श्रवण | मं ५ | ३० |
| अश्विनी | उ० भाद्र० | रेवती | | |

विषम

समग्रहमध्ये शशिरविहोरा विषमभमध्ये रविशशिनोः सा ४० शुक्रकुजजीवशनिभृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

56

55

57

| राक्षस | नरः | देवता |
|---|---|---|
| मघा | पूर्वा ३ | अनुरा० |
| श्ले० | उत्तरा ३ | पुनर्वसु |
| ध० | रोहिणी | मृगशिर |
| ज्ये० | भरणी | श्रवण |
| मू | आर्द्रा | रेवती |
| श० | | स्वाति |
| कृ | | हस्त। अश्वि |
| चि | | पुष्य |
| वि | | |

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवसिंदमू
लवरुणानलतक्षराधाः पूर्वोत्तरात्रयविधा
त्यमेशभानि मैत्रादितीदुहरिपौष्णमरुल्ल
घूनि २९ निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्त
मास्यादमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा॥
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो दनुज
विबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोत्र ३० मृत्युः
षडष्टके ६।८ जेयोपत्यहानिर्नवात्मजे ९।
५ द्विद्वादशे २।१२ निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौ

---



58

ज्योसभौमित्रेसुचबुधौशनेरविशशिक्ष्माजादिषोन्यःसमः २८

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी शतभिषा | रेवती भरणी | पुष्य कृत्ति | रोहिणी मृगशिर | आर्द्रा मूल | पूर्वाफाल्गुनी मघा | पुनर्वसु अश्लेषा |
| अश्व | गज | छाग | नाग | श्वान | मूषक | मार्जार |
| उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभा० | स्वाति हस्त | ज्येष्ठा अनुराधा | चित्रा विशाखा | श्रवण पूर्वाषाढ | धनेष्ठा पूर्वाभाद्रपद | अभिजि उषाढ |
| गौ | महिष | मृग | व्याघ्र | मर्कट | सिंह | नकुल |

| | सू | चंद्र | भौ | बु | गुरु | शु | श० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | चंद्र भौम जीव | सूर्य बुध | जीव सूर्य चंद्र | सू शु | रवि चंद्र भौम | बुध शनि | शुक्र बुध |
| सम | बुध | भौम जीव शु० श० | शुक्र शनि | भौ जी श | श० | भौम जीव | जी० |
| शत्रु | श० शु० | ०० ०० | बु० | चं | बुध शुक्र | सूर्य चंद्र | सूर्य चंद्र भौम |

शुक्रस्योदयादिज्ञानचक्रं

| | | |
|---|---|---|
| पश्चिमास्त | १० | दिन |
| तोयोदय | ९ | मास |
| पूर्वास्त | २।१५ | मास दिन |
| पूर्वोदय | ८।१५ | दिन मास |

कन्या ४

मु० सतकनिर्गमेपरैः १७ चूडाव्रतंचापिविवाहतोव्रतादुद्वाचनेष्टापुरुषत्रयान्तरे वधुप्रवेशा
२७ च्चसुताविनिर्गमःषण्मासतोवाद्विभेदतःशुभः १८ श्वश्रूर्विनाशमहिजोसुतरांविध
नःकन्यासुतोनिरतिजैौष्ट्यश्वशुरंहतस्त्र ज्येष्ठाभजाततनयास्वधवाग्रजंचशक्राग्नि
जाभवतिदेवरनाशकर्त्री १९ द्वीशाद्यपादत्रयजोदेवर मोवा मूलांत्यपाद
सर्पाद्यपादजातेतयोःशुभे २० वर्णोवश्यंतथातारायोनिश्चग्रहमैत्रकं गणमैत्रंभ
कूटंचनाडीचैतेगुणाधिकाः २१ द्विजाझषालिकर्कटास्ततोनृपाविशोंऽघ्रिजाः वरस्यव
र्णतोधिकावधूर्नशस्यतेबुधैः २२ हित्वामृगेंद्रंनराशिवश्याःसर्वेतथेषांजलजा
श्चभक्ष्याः सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिंज्ञेयंनराणांव्यवहारतोऽन्यत् २३ कन्य
र्क्षाद्दरभेयावत्कन्याभंवरभाद्दपि गणयेन्नवभिःशेषेत्री२षु५द्वि७भंमसत्स्वर २८



तं २४ अश्विन्यंबुपयोर्हयोनिगदितःस्वात्यर्कयोःकासरःसिंहोवस्वजपाद्ययोःसमुदितो
याम्यांत्ययोःकुंजरः मेषोदेवपुरोहितानलभयोःकर्णांबुनोर्वानरःस्याद्वैश्वाभिजितो
स्तथैवनकुलश्चांद्राब्जयोन्योरहिः २५ ज्येष्ठामैत्रभयोःकुरंगउदितोमूलार्द्रयोःश्वातथाभा
र्जारोदितिसार्पयोरपिमघायोन्योः थेवोंदुरः व्याघ्रोद्वीशभचित्रयोरपिचगौर्बुभक्ष्ये
त्यजेत् योर्योनिः पादगयोःपरस्परमहावैरंभयोन्योर्भवेत् २६ मित्राणिद्युमणेःकुजेज्यश राशिमं ४
शिनःशुक्रार्कजौवैरिणौ सौम्यश्चास्यसमोविधोर्बुधरवीमित्रेनचास्यद्विषत् शेषा
श्चास्यसमाःकुजस्यसुहृदश्चंद्रेज्यसूर्याबुधःशत्रुःशुक्रशनीसमौचशशभृत्सूनोः
सिताहस्करौ २७ मैत्रेचास्यरिपुःशशीगुरुशनिक्ष्माजाःसमागीष्पतेर्मित्राण्य
र्ककुजेंदवोबुधसितौशत्रूसमःसूर्यजः मित्रेसौम्यशनीकवेःशशिरवीशत्रूकुजे



CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मु०
२६ मोत्थंचविलोक्यवालविधवायोगंविधायव्रतंसाविन्याउतपैप्पलंहिसुतयादघादिमांवा
रहः सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वाविवाहंस्फुटंदयात्तांचिरजीविनेत्रनभवेद्दोषः पु
पुनर्भूभवः ७ प्रश्नलग्नक्षणेयाहशापत्यपुरुखेव्ययाकामिनीतत्रचेदाव्रजेत् कन्य
कावास्तुतोवातदापंडितैस्ताहशापत्यमस्याविनिर्दिश्यते ८ शंखभेरीविपंचीरवैर्मं
गलंजायतेवैपरीत्यंनदालक्षयेत् वायसोवारवरःस्यात्सृगालोपिवाप्रश्नलग्नक्षणे
रौतिनादंयदि ९ विप्रस्वातीविस्रवरवीजयमैत्रैर्वैस्वाग्नेयैर्वाकरपीडोचितस्र्क्षैः
क्षैः वस्त्रालंकारादिसमेतैःफलपुष्पैःसंतोष्यादौस्यादनुकन्यावरणंहि १० ध
रणिदेवोथवाकन्यकासोदरःशुभदिनेगीतवाद्यादिभिःसंयुतः वरहतिंवस्त्रयज्ञो
पवीतादिनाध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वैस्त्रयैराचरेत् ११ गुरुशुद्धिवसेनकन्यकानांसमवर्षे २६

पुषडष्टकोपरिष्टात् रविशुद्धिवशाच्छुभोवराणांशुभयोश्चंद्रविशुद्धितोविवाहः १२ मि
थुनेकुंभ ११ मृग १० लि ८ हत्ता २ज १ गेमिथुन ३ गेपिरवौत्रिलवे १० शुचे: अलिमृगा
ज ८।१०।१ गतेकरपीडनंभवतिकार्तिकपौषमधुष्वपि १३ आद्यगर्भसुतकन्ययो
र्द्वयोर्जन्ममासभतिथौकरग्रहः नोचितोथविबुधैःप्रशस्यतेचेद्द्वितीयजनुषोःसु
तप्रदः १४ ज्येष्ठद्वंद्वंमध्यमंसंप्रदिष्टंत्रैज्येष्ठंचेन्नैवयुक्तंकदापि केचित्सूर्यंव
ह्निगंप्रोह्यवाढंनैवान्योन्यंज्येष्ठयोःस्याद्विवाहः १५ सुतपरिणयात्षण्मासांतः
सुताकरपीडनंनचनिजकुलेतद्वद्गामुंडनादपिमुंडनं नचसहजयोर्देयेभ्रात्रोः
सहोदरकन्यकेनसहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धेशुभेनपितृक्रिया १६ वधूवरस्यापिकु
लेत्रिपूरुषेनाशंव्रजेत्कश्चननिश्चयोत्तरं मासोत्तरंतत्रविवाहइष्यतेशांत्याथवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

64

शनिनोहिलग्नी २१ गृहप्रवेशेयात्रायांप्रश्नांचेद्रंदवंतथा विवाहेच यथाक्रमं भौमाश्विनी
शनौव्रास्त्रंगुरौपुष्यंविवर्जयेत् २२ आनंदाख्यःकालदंडश्च धूम्रोधातासौम्याध्वांक्ष
केतुकमेल श्रीवत्साख्यावज्रकंमुद्गरश्छत्रंमित्रंमानसंपद्मलुम्बौ २३ उत्पातमृत्यु
किलकाशासिद्धी शुभोमृताख्यामुशलंगदश्च मातंगरक्षश्चरसुस्थिराख्यः प्रवर्द्धमा
नाः फलदाः स्वनाम्ना २४ दास्राद्दर्के मृगाद्दिंदौ सार्पाद्भौमेकराद्बुधे मैत्राद्गुरौभृगौवैश्वा
द्गणपामन्देचवारुणात् २५ धांक्षेवज्रेमुद्गरेचबाणनाड्यः वर्ज्यावेदाः ४ पद्मलुंबे
गदेऽश्वाः ७ धूम्रेकाणेमूशलेभद्वयंद्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्चसर्वे २६ अथरवि
योगाः सूर्यभाद्वेद ४ गो ९

तद्धानता

न्यतेहितन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः १ आदौसंशुज्य रत्नादिभिरपगणकं वेद
येत्स्वस्यचित्तं कन्या हा हृदिगी १० शा ११ नल ३ हय ७ विशिखे ५ प्रश्नलग्नाद्यदींदुः दृष्टो
जीवेनसद्यः परिणयनकरोगो २ तुला ७ कर्कटा ४ स्त्यं वास्यात्प्रश्नस्यलग्नंशुभखचर
युतालोकितंतद्विदध्यात् २ विषमभांशगतौशशिभार्गवौयदिपश्यतः स्वयतोवर
लाभमिमौयदायुगलभांशगतौयुवतिप्रदौ ३ षष्ठाष्ट ६।८ स्थः प्रश्नलग्नाद्यदींदुर्लग्ने
क्रूरःसप्तमेवाकुजःस्यात् मृतौवोढुःसप्तमे ७ तस्यभौमोरंजासास्याद्द्वसंवत्सरेण
४ प्रश्नतनौयदिपापनभोगः पंचमगोरिपुदृष्टशरीरः ।। नीचगतश्चतदाखलुकन्यासा
कुलटात्वथवामृतवत्सा ५ यदिभवतिसितातिरिक्तपक्षेतनुदृष्टःशिः समराशिगः
शशांकः अशुभखचरवीक्षितो ऽरिरंध्रे ६ भवतिविवाहविनाशकारकोयं ६ ज

63

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ०१२ [illegible] लि [illegible]

पचयोदये स्थिरे २ जीर्णगृहे ऽग्न्यादि भयान्नदे ऽपि मार्गे [illegible] योर्षावणिके पिमत्स्य [illegible]
त् तेषां शुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादि विचारणत्र २ मृदु क्षत्र क्षिप्र चरेषु
मलने वास्तु [illegible] नं रत वलिं च कारयेत् त्रिकोणकेंद्रायधनत्रिगै शुभै र्लग्न त्रिष्टाय
गतैश्च पापकैः २ शुद्धांबुरंध्रे ४।८ विजनुर्भमित्यौब्यकीर [illegible] रदः [illegible] ने अ
देवगुरवेकलशद्विजाश्च कृत्वा विशेद्द्मसभक्षः [illegible] ४ वामो [illegible] पस्ताप र्थ २
लीभ २१ तोर्के पंचमे ५ प्राग्वदनादि मंदिरे पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभोनंदादिके
यान्यजे [illegible] ने ५ वक्रे भ २ रवि भात्मवेशः समये कुंभे ग्निदाहः कृता ४ प्रा
च्यामुद्वसनं कृता ४ यमगतालाभः कृताः ४ पश्चिमे श्रीः [illegible] ४ कलिकृत्तरे युगमि
ता ४ गर्भे विनाशो गुदे रामाः स्थैर्य्यमृत स्थिरत्व मनलाः ३ कं ठे भवेत्सर्वदा ६।

१

कुरविशिखिगतिशबकेंद्रे [illegible]
मरामृः संदिपू २ ।०।२ः।२। भं [illegible]
सनापूर्वाविदशे जन्मेषुत्पात्र [illegible] २

४

| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अं | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | अ | ध | श | पू | उ | रे |
| चं | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अं | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | अ | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो |
| भौ | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अं | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | अ | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु |
| बु | ह | चि | स्वा | वि | अं | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | अ | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ |
| गु | अं | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | अ | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि |
| शु | उ | श्र | अ | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अं | ज्ये | मू | पू |
| श | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अं | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | अ | ध |
| श्री | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | आनंद | कालदंड | धूम्र | प्रजापति | सौम्य | ध्वांक्ष | ध्वज | श्रीवत्स | वज्र | मुद्गर | छत्र | मित्र | मानस | पद्म | लुंब | उत्पात | मृत्यु | काण | सिद्धि | शुभ | अमृत | मुसल | गद | मातंग | राक्षस | चर | स्थिर | प्रवर्द्धमान |

65

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मु० शोभनाः २ वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी शूकरी रला पिंगला [illegible] शिवा [illegible]
४७ संज्ञिता २ छिक्कर [illegible] कंठेवानरो रुरुः [illegible] स्थान [illegible]
दक्षिणा शुभाः ३ [illegible] यांबनगच्छिणः [illegible] व्रजेत्तो निध
न्यानामस्तरतः ५ आद्ये च शकुने स्थित्वा प्राणा नेकादश व्रजेत् द्वितीये षोडश प्राण
ान् [illegible] सिद्ध व्रजेत् ६ गजानिष्ठ [illegible] प्रवेशनं [illegible]
नर्गमं [illegible] शोनदे दारुणा भेनयो [illegible] विनाशनं [illegible]
नासातिथि कालवासरो [illegible] सिद्धादि [illegible] परिचारक
दंडक [illegible] सव [illegible] काले
यय [illegible] भौम वासराः [illegible] पुष्य [illegible] काभिजि ४७

| पूर्वमुखे गृहे | याम्यमुखे गृहे | पश्चिममुखे गृहे | उत्तरमुखे गृहे |
|---|---|---|---|
| लग्नात् १२ ५ | लग्नात् १२ ५४ | लग्नात् २ | लग्नात् ११ |
| लग्नात् ९ | लग्नात् ६ | लग्नात् ३ | लग्नात् १२ |
| लग्नात् १० | लग्नात् ७ | लग्नात् ४ | लग्नात् १ |
| लग्नात् ११ | लग्नात् ८ | लग्नात् ५ | लग्नात् २ |
| लग्नात् १२ | लग्नात् ९ | लग्नात् ६ | लग्नात् ३ |

| मू | र | द | प | उत्त | | गुद | कंठ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ |
| अग्नि | उद्वास | लाभ | श्री | कलि | नाश | स्थिर | स्थ |

एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य
वितान पुष्प [illegible] तिथोष पुंकं
शिल्प [illegible] देव द्विज पौरा [illegible]
न [illegible] मिति [illegible] दर्शे: ७ आसी [illegible] पुरे षडंग निगम ध्ये
तद् द्विजैर्मंडिते ज्योतिर्विल्लिलकः फणीदर चि [illegible] नाति श्रमः॥
तज्ज जातक संहिता गणित [illegible] न्यान्यो [illegible] भुजंत कौलं कृतिवे
दवाक् विल सद्बुद्धिः सचिंतामणिः ८ ज्योतिर्विद् गणवंदितां घ्रिक
मलस्तस्मात् [illegible] रासीत् [illegible] इति [illegible] ह
रः योरम्यां जनिपद्धतिं समकरोत् [illegible] मिनीटीकां [illegible] ५१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मु० मंतः सप्तसप्तंत दिनत्रयमनुजनः पंचरात्रं तथैव ऊर्ध्वं गच्छे शुभार्थे [illegible] मदिनात्तपराज्ञाति पर्वं

४६ त्राशक्तोनदिने सो रिपुविजयमना मैथुनं नैव कुर्यात् २४ क्षुरं [illegible] ज्यं [illegible] नि राजं क्षौरं

त्याज्यं पंचस्नं [illegible] क्षौद्रं तैलं वा सरे [illegible] मिष्टान्यान्यं जातम्भमिपालेन सर्वम् २४ ग०कार

भुक्त्वा गच्छति यदि वै नैलगुडक्षीर [illegible] मांसानि दि [illegible] नि वर्नि ते म [illegible] णः स्त्रीद्विजमवमान्य ग

च्छते [illegible] २५ यदि मासस्तु चन्द्र सौम्यमा [illegible] दि बृहस्पतिर्हि भवेदकाल वृष्टिः पश्चमत्र्य

पदांकिता नयावक्षस्तु धास्यान्नहिता वदेव दोषः २६ अत्यायां हृष्टौ दोषो ऽन्यो भवतस्या

दोषो भूपानजीस्त्रतानां निर्घोदिष्टौ वा जाता तासां भयात् २७ विप्रास्त्रे भक्ष्यान्न [illegible] दधि गो मधु३

सिद्धार्थ पत्रं [illegible] वेश्यावाद्य मयूर चामर नकुलावद्धैक पश्वामिषम् [illegible] कुसुमेक्षु

पूर्णकलश छत्राणि मृत्स्न्यकार त्नोस्नीष सितोक्ष मद्यससुत स्त्रीदीप्त वैश्वानर [illegible] आद ४६

70

श्रीजतनधौतवस्त्र रजकामीनाज्य सिंहासनं शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधु छागास्त्र गोरोचनं भा

रद्वाजन्नपान वेदनिनदा मांगल्य गीतांकुशा दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः

२९ वंध्या चर्म तुषास्थि सर्प लवणांगारेंधनं क्लीब विट् तैलोन्मत्त वसौषधारि जटिलम्

भ्रातृतृणव्याधिताः नग्नाभ्यक्त विमुक्त केश पतित व्यंग क्षुधार्तोऽस्त्र कृत्स्त्रीपुष्पं शत्रु रः

स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतं १०० काषायी गुड तक्र पंक विधवा कुब्जा कुटुंबे कलि

वस्त्रादेः स्खलनं तुलायसमरंक [illegible] निधान्यानि च कार्पासं वमनं च गर्दभ रवो दक्षे

तिरुक् गर्भिणी मुंडार्द्रवस्त्र दुर्वचोंध बधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः १ गोधाजाहककम्र

कराहि शशकानां कीर्तनं शोभनं नो शब्दो न विलोकनं च कपि [illegible] क्षाणां [illegible] तो वान्ययः न

धुत्तार अयप्रवेश समरे नष्टार्थ संवीक्षणे यान्यस्त्राः दु [illegible] प्रेक्षणे विशेषाचोदिताः

69

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नीम्बलभतेयोगांक्षियोगेव्रजन् ७४ इषमासिसितादशमीविजयाशुभकर्मसुसिद्धिकरीक
थिता श्रवणर्क्षयुतासुतरांशुभदान्टपते [illegible]र्गमिजयसिद्धिकारी ७५ चेतोनिमित्तशकुनैरति
सुप्रशस्तैर्ज्ञात्वाविलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति सिद्धिर्भवेदथपुनःशकुनादितोपि [illegible]विशुद्ध
रधिकानचतांविनेयात् ७६ व्रतबंधनदेवनप्रतिष्ठा[illegible]करपीडोत्सवस्तकासमाप्तौ [illegible]क
दापिचलेत्कालविद्धजनवर्षांतुहिनेपिसप्तरा[illegible] ७७ महीपतेरेकदिनेपुरात्पुरेयदा
भवेतांगमनप्रवेशकौ भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनी विचारयेन्नैवकदापिपंडितः ७८
यद्येकस्मिन्दिवसेमहीपतेर्निर्गमप्रवेशौस्तः तर्हिविचार्यःसुधियाप्रवेशकालोनयया
त्रिकस्तत्र ७९ प्रवेशात्निर्गमंतस्मात्प्रवेशंनवमेतिथौ नक्षत्रेपितथावारेनैवकुर्या
कदाचन ८० अग्निंहुत्वादेवतांपूजयित्वानत्वा[illegible]विप्रानर्चयित्वादिगीशं दत्वादानंब्राह्म

दमभिगत्यदिश्ययानं आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपा[illegible]त्रंदत्वा[illegible]गणकवराय[illegible]गच्छेत् ८१
प्राच्यांगच्छेद्गजेनैवदक्षिणस्यांरथेनच दिशिप्रतीच्यामश्वेनतथोदीच्यांनरैर्न्टपः ८२ दे
[illegible]गुरु[illegible]स्वगृहान्मुख्यक[illegible] [illegible]दिग्विज्ञानुमतः[illegible]
एवमंगलमेदात् ८३ कार्याद्येरिहगमनस्यचेद्विलंबोभूदेवादिभिरुपवीतमायुधंवा
क्षौद्रंचाभलंमाध्य[illegible]चालनीयंसर्वेषांभवतियदेवहृद्यं[illegible]वा ९० गेहाद्गेहांतरमपिगमस्तर्हि
यात्रेतिगर्गःसीम्नःसीमांतरमपि [illegible]बाणविक्षेपमात्रं प्रस्थानंस्यादितिकथयतेयोभ
रद्वाजएवंयात्रा[illegible]वहिरपिपुरात्स्याद्वासिष्ठोब्रवीत् ९१ प्रस्थानमत्रधनुषांहिश
तानिपंचकेचिज्जगुर्दशवचान्ये संभाषितोयदिहमंदिरतःप्रयातो[illegible]तव्य
दिक्षुतदपिप्रयत्नेनकार्यं ९२ प्रस्थानेभूमिपालोदशदिवसमभिव्याप्यनैकत्रतिष्ठेत्सा

निकुजौरविर्द्दशम १०॥ धोमृगसुतोपिलाभ ११ दशमे १० त्रिबलाभा रिपुभेषु नसुतशनीगुरुज्ञ
भगुजास्तथा दलंबुधा ६३ समुदयगेविबुधगुरौ नंद माहेहिमकिरणे हिबुक ४ गतेबुधभृगु
जौराहजगता खलखचरा ६४ त्रिदशगुरुस्त्वनुगो मदने ७ हिमकिरणे रविरायश्११गतः
सितशशिजावपिकर्मगतो १० रविसुतभूमिसुतौ सहजे ३ ६५ देवगुरौ वा शशिनि त
नुस्थे ध्वासरनाथे रिपु ६ भवनस्थे पंचम ५ गे हि हिमकरपुत्रः कर्मणि सौरिः सुहृदांसि
तश्च ६६ हिमकिरणसुतो बलीयंन्नेत्रिदशपतिगुरुर्हि केंद्र स्थितः व्य यगृहस
हजा ३ रि ६ धर्म ९ स्थितो यदि भवति निर्बलश्चंद्रमाः ६७ शुभखगे रनवा ९ स्त्र ८ म
द ७ स्थे हिबुक ४ सहोदर ३ लाभ ११ गृहस्थः कविरिहकेंद्रगमी प्यतिदुष्टो वसुच ८ यलाभ
करः खलुयोगः ६८ रिपु ६ लग्न १ कर्म १० हिबुके ४ शशिजे परिवीक्षिते शुभनभोगमने

74

तिल

मु० ऐ ये दिगीशंध्यात्वा चित्ते भूमिपालो निगच्छेत् ८१ कुल्माषं ... ं तुलान्नचितथानाषंप्राग
४५ यं दधिनाज्यं दुग्धमयेऽथमासमपरं तस्यैव रक्तं तथा तक्रपायसं ... गोसंपन्नलंमोषिचाग्राशं
तथा शालिकं चपियंगुप्रथमाय वाचित्रांड जान्मत्स्य कं ८२ कौर्मं सारिक गोधिकं च पललं शाल्यं
वा० ८ हविष्यं हं क्षे स्यान्मृगरान्नकं ... पि वादि रंयनाजांन था मत्स्यां ... खलु चित्रितान्नमथ
वा दध्यन्नमेवं क्रमाद्भक्ष्या भक्षमिदं विचार्य मतिमान्भक्ष्ये तथा लोकयेत् ८३ आज्यं तिलो
दनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमं भक्ष्ययेदोहदं दिक्षु प्राशांपूर्वादिकांक्षे ८४ ... सालं
पायसं कांजीभृतं दुग्धं तथा दधि पयोऽश्वतं तिलान्नं च भक्षयेद्वा दोहदं ८५ पक्वादि
73 तोर्कदलतंडुलवारि सर्पिः श्रीणिं हविष्य मदिहेस्त्रजल ... पं भुक्त्वा व्रजेदुदकमंबुनिधे
नुमत्संगावाल्लपायस ... गुडान्नमुत्राद् ८६ उद्धृत्य प्रथमं ततस्तदक्षिणांघ्रिं दान्तिं शत्य ४५

स्थानत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सु० व्यय१२लग्न१मन्मथ७गृहेषुजय: परिवर्ज्जितेषु भनामधरैः ६९ लग्नेयदिजीवः पापायदिला
४४ भे११कर्म्म१०एयपिनाचेद्राज्याधिगमः स्यात् धनेबुधशुक्रौचंद्रोहिबुके४रा तद्वत्फलमुक्तंस
बैर्मुनिवर्य्यैः ७० रिपु६तनु१निधने८शुक्रजीवेंदवोह्यथबुधभृगुजौतुर्य्य४गेहस्थितौ ॥
तनत्रमास्तनु१मन्मथा७रि६हिबुक४त्रिगृहेचेत् क्रमतोरि६सोदर३ख१०शात्रव६होरा
१हिबुका४यगे११र्गुरुदिनेखिलखेटैः ७२ सहजे३कुजोनिधन८गश्चभार्गवोमदने७बुधो
रविरी६तनौ१गुरुः अथचेत्स्युरीज्यसितभानवोजल४त्रि३गतादिसोरिक्रु... रिपु६
लाभोगाधियोगःस्मृतः योगेक्षेमम‌थाधियोगगमने क्षेमंरिशणं चधंचायोक्षेमयशोव ४४

पु १
च्चादौतरणिस्तनौभृगुसुतोनाभव्ययेभ्रसूतः कर्मस्थोथत मोनवाष्टमगृहेसौरिस्त
थासप्तमे। चंद्रः शत्रुगृहात्मजेपिचबुधः पातालगोगी... विलग्नसदना
लादिकाः कालिनाः ४९ भृगेणत्वापि... मेत्रप्रस्था
य प्राक्षेपस्थित्यामलेवजनतथा ५० प्रस्थानहस्तेमिलत... स्थित्वाजयाप्रीम
वसो... वसेत्यपुष्पेनिजसीम्निचैकरात्रौ... भनेवनीशः ५१ ...का
लो विना... विनोत्तरांनिशा... यान्यांविनाजिजित
५२ लग्नाजरा... राहे... सुहु...
पारा...गमयाः १२ ५३ केंद्रेकोणेसोम्यखेटा... पाप...यषट
रवेधुंचंद्रः नेष्टालग्न्यांत्यारिरंध्रेंशानिःखेटस्तेशुकोलग्ने...त्यारिरंध्रे ५४।

मु०
४३ योगा सिद्धिर्ध [illegible] लिपतीनामक्षगुणैरपि भद्देवानां चौराणामपिशत्रु नैरुक्तामवति मुहूर्त्तोनरि
तरमनुजाना ५५ सहजेश्वरविहिंशाम१मेशशिनि यापुनि मे गत्नौरिपु ६ष्ट हेसितःसुते॥
हिबुके ४बुधोगुरुः [illegible] हलग्ने सजयत्यरीन्यचलितोचिरात्नृपः ५६ भ्रातरि३सौरि
र्भे मिसुतो वै [illegible] लग्ने [illegible] दैत्यगुरुः॥ आय११गते केंशशु जयस्थेदनुकूलो दैत्यगुरुर्गौत
नौजीवइंडुर्म्रेतो वैरिगोर्कः प्रयातोमहीशो जयत्येवशत्रून् ५८ लग्नगतः स्याद्वेवपु
रो [illegible] लाभधनस्थैः शोधनगोगेः५९ धनेवे नैसमुदयगे केंजीवे भृगौ केविदिधनसंस्थे॥
ईट्गवो गे चलतिनरेशो जेताशत्रुगेरुड्ढ्वाहीन ६० वित्तगतःशशिपुत्रो भ्रातरि३वा
सारसाथः लग्न [illegible] गते भृगुपुत्रेस्थ [illegible] सर्वे ६१ उदयेरविर्भदिसोरिर
रिगःशशीदशने१०पि [illegible] दधापतिर्यदियातिरिपुवाहिनी वशमेति ६२ तनौ१श ४३

४३ [illegible]
मु० पापि कुंभ [illegible] कृत्वा [illegible] दशमसारद्भावोध्वाऽथनैस्त्वष्टा [illegible]

मु०
५० गुरौ लग्नगे वाम्बरगो वेश्मगते पवा शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्यायुक्तं चिरं गृहं २४ इ [illegible] नां१व
रे१० [illegible] देकोपि परांसस्थोयहोगृहं अब्दांतः परहस्तस्थं [illegible] वर्णयोऽबलः २५ पुष्य
ध्रुवेंदुहरिसर्प्पजलैः सजीवैस्तद्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् द्वीशाश्विनक्षवसुपा
शिशिवैः सशुक्रैर्वारैसितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् २६ अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रा
नलांतकैः समंदैर्मंदवारे स्याद्रक्षोभ्रतयुतं गृहं २८ सू [illegible] शीर्षे ४भैः शिरस्यग्नि
लं लक्ष्मीस्ततः कोणभैर्नगै८रुद्वसनं ततो गजर्क्ष मितैः शाखासु सौख्यं भवेत् देहल्यां
गुणभैर्मृति [illegible] गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं वि
धेयं शुभम् २९ इति श्रीगृहारंभप्रकरणं १० सौम्यायनेज्येष्ठतपोंत्यमा
धवेयात्रा निवृत्तौ नृपतेर्नवेगृहे स्याद्वेशनं द्वाः स्थमदः [illegible] वोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नो २०
पौ [illegible] तामघांबुदर्शे कोभिर्द्वेर्त्मा [illegible] र्दस्यात् ॥ सद्भैः के र [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

80

79

शान्यादोपुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः स्वनोर्नाशः स्त्रीविनाशो [illegible]तिभ्रसंपत्तीडाशुतुलः स्याच्च सौ

ख्य २० स्नानस्यपाकशयनाभ्रभुजेश्च धान्यभांडारदेवतगृहाणि च पू[illegible]तः स्युः तन्म

| देवालयेस्वतक | ईशान | वायव्य | नैऋत्य | आग्नेय |
|---|---|---|---|---|
| यमाणे | मीन | मिथुन | कन्या | धन |
| सुरतातस्थिर | मेष | कर्क | तुल | मकर |
| कण्डुभोमुद | वृष | सिंह | वृश्चिक | कुंभ |
| गेहविधिरवे | सिंह | वृश्चिक | कुंभ | वृष |
| | कन्या | धन | मीन | मिथुन |
| | तुला | मकर | मेष | कर्क |
| जलाशयेस्नान | मकर | मेष | कर्क | तुल |
| | कुंभ | वृष | सिंह | वृश्चिक |
| | मीन | मिथुन | कन्या | धन |

ध्यन[illegible]म[illegible]पुरीषविधिः व्यासाख्यरोदनरतौ
पथस्[illegible]धाम २१ जीवार्कविधुकपानैश्चरेषुल
ग्ना १ ह[illegible]जि[illegible]७ सुख४ द्विगे३षु स्थितिः प्रातस्या
च्छरदांसितार्की [illegible] ज्येतनु१ चांश गहसुते५ शनेर्वे २२
लग्नां १ वरा १० [illegible] शुभग्रहसानुभिः केंद्रगुरौ वषे
शतायुरालये [illegible]यौ ८ गुरु [illegible] १० शपीकुजा
केजौ लाभे ११ तदाशीतिसमायुरायं॥ २३ खोच्चे

... to
...op.
Language - Sanskrit, Hand Written.
Size -
(औं विबु विहसु वदं सिंह - - - तदाशीति
समायु रायं ॥ २३ श्लोक्वे )

005613

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA